संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : ₹ ६
प्रकाशन दिनांक : १ अगस्त २०१३
वर्ष : २३ अंक : २
(निरंतर अंक : २४८)

जीवन में तमाम परेशानियों के बीच रहकर भी श्रीकृष्ण जैसी चित्त की समता और मधुरता को बनाये रखने का हमारा प्रयत्न होना चाहिए। यह जन्माष्टमी अपने प्रेम को प्रकट करने का संदेश देती है। जितना अधिक हम आत्मनिष्ठा में आगे बढ़ते हैं, उतना-उतना हम भगवान श्रीकृष्ण का आदर करते हैं।

नर सेवा ही... नारायण सेवा

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

पूज्य बापूजी की प्रेरणा से उत्तराखंड में आपदा-पीड़ितों को कपड़े, कम्बल, रेनकोट, तपेलियाँ, थालियाँ, कटोरियाँ, दूध-पाउडर, चावल, दाल, आटा, तेल, बिस्कुट, नमकीन, पानी की बोतलें, जूते-चप्पल, दवाइयाँ व चिकित्सा सेवाएँ प्रदान की गयीं।

इनके अलावा वाहन-सेवा, शरबत-वितरण तथा विभिन्न प्रकार के बर्तन, तवे, लालटेनें आदि जीवनोपयोगी वस्तुओं के वितरण के साथ-साथ उनके लिए सतत भोजन-लंगर सेवा चलायी गयी।

(विस्तृत जानकारी पृष्ठ २९ पर)

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी देवनागरी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २३ अंक : ०२
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २४८)
प्रकाशन दिनांक : १ अगस्त २०१३
मूल्य : ₹ ६
श्रावण-भाद्रपद वि.सं. २०७०

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास
संरक्षक : श्री जमनालाल हलाटवाला
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफैक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में
(१) वार्षिक : ₹ ६० / -
(२) द्विवार्षिक : ₹ १००/-
(३) पंचवार्षिक: ₹ २२५/-
(४) आजीवन : ₹ ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में (सभी भाषाएँ)
(१) वार्षिक : ₹ ३०० / -
(२) द्विवार्षिक : ₹ ६०० / -
(३) पंचवार्षिक: ₹ १५००/-

अन्य देशों में
(१) वार्षिक : US $ २०
(२) द्विवार्षिक : US $ ४०
(३) पंचवार्षिक : US $ ८०

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)

	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारतमें	७०	१३५	३२५
अन्यदेशोंमें	US $ 20	US $ 40	US $ 80

सम्पर्क

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail: ashramindia@ashram.org
web-site: www.rishiprasad.org
www. ashram.org

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

(१) साधना प्रकाश ४
* गुरुपूनम का साधना-उपहार
(२) कथा प्रसंग * आत्म-महिमा में जागो ५
(३) युवा जागृति संदेश ७
* विद्या वही जो बंधनों से मुक्त करे
(४) प्रसंग माधुरी ९
* गणेशजी का श्रीविग्रह देता सुंदर प्रेरणाएँ
(५) बाल संस्कार माला ११
* कलियाँ महकें बन के फूल, संस्कार बनते महानता का मूल
(६) ज्ञान गंगोत्री * प्रेम में माँग नहीं होती १३
(७) योगामृत * सरल व अति लाभप्रद प्राणायाम १४
(८) घर परिवार * चोरी हो तो ऐसी... १५
(९) पर्व मांगल्य १६
* दुःखों की कमी नहीं फिर भी दुःखी नहीं !
(१०) उपासना अमृत १९
* जन्माष्टमी व्रत की महिमा
(११) जीवन पाथेय * कर्तव्यपरायणता २०
(१२) संस्कृति दर्शन २१
* राष्ट्रभाषा : देश का स्वाभिमान, संस्कृति की पहचान
(१३) नारी ! तू नारायणी २३
* स्त्रियों के भूषण सात सद्गुण
(१४) मधुर संस्मरण * पूज्य बापूजी व मित्रसंत २४
(१५) पर्व मांगल्य * आत्मनिर्माण का पर्व २६
(१६) भारत को गुलाम बनाना है तो... २८
(१७) संतों का कुप्रचार करनेवालों को न्यायालय का करारा तमाचा २९
(१८) तत्त्व दर्शन ३०
* ध्रुव की तात्त्विक ईश्वर-स्तुति
(१९) सत्संग पराग * मेरा उद्देश्य भी वही है... ३२
(२०) उत्तराखंड में पीड़ितों की सेवा में आगे आया संत श्री आशारामजी आश्रम ३४
(२१) शरीर स्वास्थ्य ३६
* आयु अनुसार विशेष आहार
(२२) संस्था समाचार ३८

◆ विभिन्न टी.वी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ◆

A2Z NEWS रोज प्रातः ३, ५-३०, ७-३० बजे, रात्रि १० बजे तथा दोपहर २-४० (केवल मंगल, गुरु, शनि)
care WORLD रोज सुबह ७.०० बजे
मंगलमय आश्रम इंटरनेट टीवी २४ घंटे प्रसारण
YUPPTV ZENGA TV → इंटरनेट टीवी २४ घंटे प्रसारण ←
आस्था AASTHA रोज सुबह ९.४० बजे
सत्संग टी.वी रोज रात्रि १० बजे
वैदिक रोज सुबह ८.४० बजे
सत्य रोज दोपहर २.०० बजे
दिशा रोज रात्रि ८.१५ बजे

Opinions expressed in this magazine are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

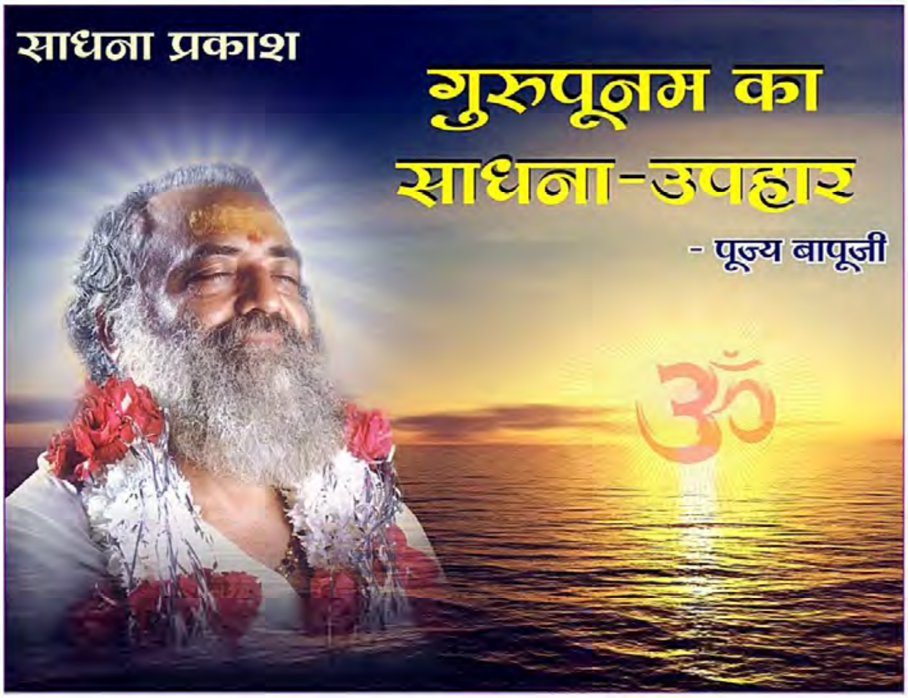

गुरुपूनम का साधना-उपहार

- पूज्य बापूजी

इस गुरुपूनम को मैंने अपने प्यारों के लिए ऐसा उपहार बनाया है कि हँसते-हँसते भगवान की भक्ति-शक्ति आ जाय, मृत्यु आये उसके पहले मृत्यु के सिर पर पैर रखने की सूझबूझ पा जाओ । दुःख आये उसके सिर पर पैर, सुख आये उसके सिर पर पैर, यश आये उसके सिर पर पैर, अपयश आये उसके सिर पर पैर ! ऐसे बाहर का पैर नहीं, यश आदि कितना भी आये आपको प्रभावित न करे।

साधना में तीव्र उन्नति हेतु नया पाठ

भगवान का ज्ञान पाने के लिए वेद, शास्त्र, पुराण ये सब खोजते-खोजते तुम थक जाओगे। तो जहाँ-जहाँ मेरी पहुँच हुई, जो भी भगवान को पाये हुए हैं, भगवान के स्वरूप का जिन्होंने वर्णन किया है, वह मैंने शास्त्र से संकलन करवा लिया और **'श्री नारायण स्तुति'** नाम का छोटा-सा ग्रंथ बनवा दिया है । आपको तैयार माल मिलता है, गौर से पढ़ो और भगवान कैसे हैं उसमें अपना मन लगाओ तो आपके हृदय में जल्दी भगवद्ज्ञान प्रकट हो जायेगा । दूसरा, मैंने यहाँ (अहमदाबाद में) आँखें बंद करवा के ध्यान करवाया था, उस सत्संग की पुस्तक **'ईश्वर की ओर'** (श्मशान यात्रा) पढ़ो तो जगत की तरफ आकर्षित होकर जीव न करने जैसे कर्म करता है और बंधनों में पड़ता है, उससे बच जाओगे । आप इन दो पुस्तकों का अच्छी तरह से अध्ययन-मनन करो, निदिध्यासन करो तो ज्ञान-वैराग्य बढ़ेगा । ईश्वर का ज्ञान पाने से आपका मन ईश्वर में आसानी से लग जायेगा और संसार की पोल जानने से विकारों से, आकर्षणों से और जहाँ शक्ति का ह्रास होता है, उससे आप बच जाओगे। **'जीवन विकास'** पुस्तक पढ़ो तो लौकिक जगत में भी मजबूत बनोगे।

तो आप 'ईश्वर की ओर', 'श्री नारायण स्तुति' और 'जीवन विकास' ये पुस्तकें पढ़ना चालू कर दो, मैं हाथ जोड़कर आपसे प्रार्थना करता हूँ । इससे आपको जो फायदा होगा उसका वर्णन मैं भी नहीं कर सकता, आप भी नहीं कर सकते। इस गुरुपूनम से अगली गुरुपूनम तक के लिए यह नया पाठ है। इससे सूझबूझ बहुत बढ़ जायेगी और थोड़ा ही ध्यान-भजन कई गुना लाभ देगा।

*** कोई भूल हो जाती है तो प्रायश्चित करना पड़ता है। गुरुमंत्र का जप करने से वह प्रायश्चित हो जाता है लेकिन गुरुमंत्र के त्याग के पाप का कोई प्रायश्चित नहीं है।**

*** सुखी होने का एक उपाय है कि जो जरूरी है कर डालो, जो बिनजरूरी है उसको छोड़ दो । और दूसरा एक तरीका है, जो होनेवाला है वह अवश्य होकर रहेगा और जो नहीं होनेवाला वह नहीं होगा, बस क्या है ! चलो, मजे में रहो। - पूज्य बापूजी**

कथा प्रसंग

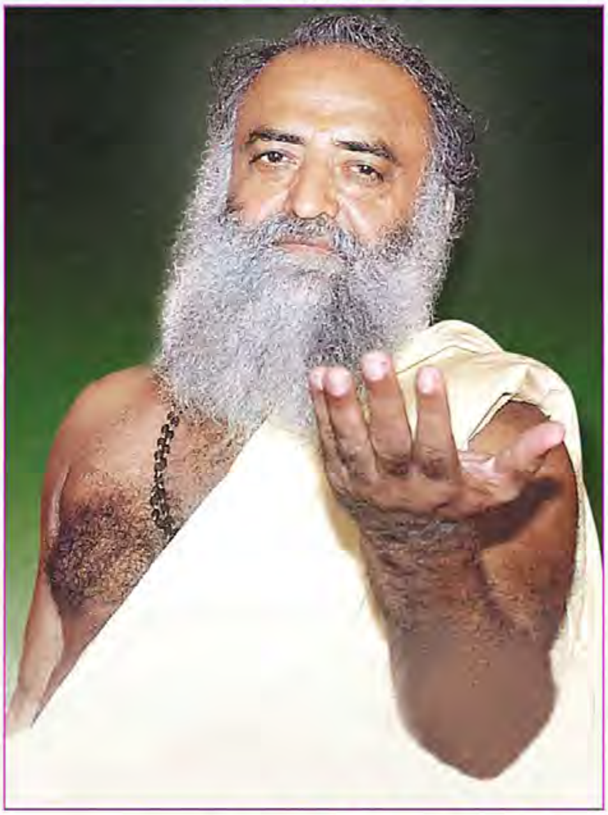

आत्म-महिमा में जागो

- पूज्य बापूजी

एक सम्राट था । उसका इकलौता प्यारा लड़का पागल-सा हो रहा था । कभी वह मुस्कराये, कभी नाचे-गाये, कभी रोने लग जाय तो कभी जोरों से हँसे या चिल्लाये । कोई कुछ कहे तो सुना-अनसुना कर दे और बेपरवाह बना रहे । सम्राट ने उसे खूब समझाया, अपने ढाँचे में ढालने की बहुत कोशिश की लेकिन वह सफल नहीं हो सका । आखिर नाराज होकर सम्राट ने उसे अपने घर से निकाल दिया ।

वह लड़का घूमता-घामता बहुत दूर निकल गया । कहीं दीन-हीन लोगों की बस्ती में पहुँच गया । भूख लगती तो भीख माँगकर खा लेता और प्यास लगती तो जहाँ-तहाँ पानी पी लेता था । उसका हाल बेहाल हो चुका था । वह अब भूलने लगा कि 'मैं सम्राट का बेटा हूँ ।'

ऐसा करते-करते बारह साल बीत गये । सम्राट बूढ़ा होने लगा । उसको अब अपने इकलौते बेटे की याद सताने लगी । उसने वजीरों और सिपाहियों को बुलाकर आदेश दिया : ''राजकुमार जहाँ कहीं भी हो, उसे ढूँढ़कर ले आओ । आखिर राज्य उसको ही देना है । कोई और तो है नहीं जिसको मैं राज्य दे सकूँ ।''

दूर लड़का तो भिखारियों के संग में पूरा भिखारी हो गया था । अपने को उन लोगों के समान मानने लगा था । एक बार वह घूमता-घामता कहीं रास्ते के किनारे जा बैठा । पुराने कपड़े और फटे हुए जूते पहने थे । गर्मियों के दिन थे । वहाँ बैठकर गीत गाता हुआ भीख माँग रहा था । राजकुमार को ढूँढ़ता हुआ एक वजीर उधर जा पहुँचा । उसने देखा कि यह भिखारी, जो गीत गा रहा है, इसका चेहरा हमारे राजकुमार जैसा है । वजीर ने उसे गौर से देखा, उसकी आवाज सुनी और उसे पहचान लिया । वजीर पास गया, उसे प्रणाम किया और कहा : ''राजकुमार ! आपके पिता आपको याद कर रहे हैं । आप अपना राज्य सँभालने के लिए चलिये । आप सम्राटपुत्र हैं, आप यह क्या कर रहे हैं !''

इतना सुनते ही वह चौंककर उठ खड़ा हुआ । उसने अपने भिखारीपन की भावना को झटक दिया और वजीर से कहा : ''नौकरों को भेजकर मेरे लिए नये वस्त्र, जूते आदि मँगवाओ और स्नानादि की व्यवस्था करवाओ, मैं तैयार हो जाऊँ ।''

उसे वजीर को हुक्म देते हुए देखकर आसपास के लोग उसे घूर-घूरकर देखने लगे । वे कहने लगे : ''अरे ! दो मिनट पहले तुम कौन थे और अब क्या हो गये ?''

उसने कहा : ''मैं अपने-आपको भूला हुआ था । अब अपने पद की स्मृति आ गयी तो भिखारी से

राजकुमार बन गया।''

वह सम्राटपुत्र गली-गली गाता फिरता था और माँगता फिरता था पर भूख मिटाने जितना भी नहीं पा सकता था। अपने सम्राटपने की स्मृतिमात्र से परितृप्ति के सब साधन उपलब्ध हो गये। ऐसे ही आपको जब अपने असली आत्मस्वरूप की स्मृति आ जायेगी, तब आप भी पूर्ण तृप्त हो जायेंगे।

जैसे उस भिखारी को स्मृति आ गयी कि 'मैं सम्राट हूँ।' तुम्हें भी केवल स्मृति आ जाय कि 'मैं सम्राटों का सम्राट साक्षी आत्मा हूँ।'

बारह साल से भीख माँगते-माँगते वह भूल चुका था कि मैं सम्राट का बेटा हूँ। भूलने में तो बारह साल लगे लेकिन अपने सम्राटपने को समझने में देर नहीं लगी। वैसे ही तुम सदियों से परमात्मा को, अपने आत्मस्वरूप को भूले हुए हो। परमात्मा को भूलने में तो युग लगे हैं लेकिन स्मृति क्षणमात्र में आ सकती है।

वेदांत कहता है कि 'सत्त्वगुण, रजोगुण, तमोगुण - इन तीनों गुणों से मिश्रित जो चैतन्य है वह मैं नहीं हूँ पर इन तीनों गुणों को जो प्रकाशित करता है, वह मैं प्रकाशस्वरूप आत्मा हूँ। जाग्रत को मैंने देखा, स्वप्न को मैंने देखा, सुषुप्ति को मैंने देखा। मैं ये अवस्थाएँ नहीं पर इन तीनों अवस्थाओं का साक्षी हूँ। मैं परिस्थितियों में उलझनेवाला नहीं पर परिस्थितियों का साक्षी हूँ। ऐसा परिस्थितियों का साक्षी सच्चिदानंदघन ब्रह्म मैं हूँ।' ऐसा साक्षात्कार हो जाय, उसमें विश्रांति मिल जाय तो प्रकृति आपके अनुकूल होने लगेगी, दीनता-हीनता, छल-कपट, सारे दुःखद स्वप्न टूट जायेंगे और सुखद स्वरूप का साक्षात्कार हो जायेगा। आपका मंगल होगा, आपकी मंगलमय दृष्टि, वाणी से लोगों का भी मंगल होने लगेगा।

***

कैसे प्रेरक हैं भगवान !

- पूज्य बापूजी

भगवान कैसी लीला करते हैं ! मेरे को दिल्लीवाले बोलने लगे : ''बापूजी ! जो भी खर्चा होगा हम लोग व्यवस्था कर लेंगे। एक बार बद्रीनाथ में सत्संग हो जाय।''

मैंने कहा : ''चुप रहो !''

फिर दूसरा आया : ''साँईं ! तारीख दे दो, कितने वर्ष हो गये !''

मैंने कहा : ''चुप रहो !''

फिर दो-तीन व्यक्ति आये : ''साँईं ! बद्रीनाथ में...''

मैंने कहा : ''चुप रहो !''

जितना जोर मारें, प्रार्थना करें उतना ही मैं जोर से उनको डाँटूं। जिन दिनों उत्तराखंड में बादल फटा उन दिनों सत्संग कराने की आज्ञा ले रहे थे। उनको पता ही नहीं था कि बादल फटेगा, मेरे को भी पता नहीं था। यह कैसा बुलवाया भगवान ने ! अगर मैं हाँ भरता तो कितना बड़ा जनसैलाब सत्संग के लिए बद्रीनाथ आ जाता। फिर और भी कुछ गड़बड़ी होती। भगवान कैसी प्रेरणा देते हैं !

बुद्धिमान पुरुष संसार की चिंता नहीं करते लेकिन अपनी मुक्ति के बारे में सोचते हैं।

युवा जागृति संदेश

विद्या वही जो बंधनों से मुक्त करे

- पूज्य बापूजी

जो भगवान के शुद्ध ज्ञान में शांत रहना सीखता है, मिले हुए सामर्थ्य का सदुपयोग करता है उसके जीवन में शक्तियाँ आती हैं और निर्भयता आती है। ऐसा नहीं कि मिली हुई सुविधा का उपयोग मोबाइल में गंदे गाने भरकर करे, यह तो लोफरों का काम है। जीवन को महकाने के समय मोबाइल फोन में गंदे गाने, गंदी शायरियाँ, गंदी फिल्मों के चित्र, प्रेमी-प्रेमिकाओं की बातें रखने से आज के युवक-युवतियों की दुर्दशा हो रही है।

रामसुखदासजी महाराज बोलते थे कि 'आजकल तो स्कूल-कॉलेज में बेवकूफी पढ़ाई जा रही है। ऐसा पढ़ूँ, ऐसा बनूँ... दूसरे को ठगकर भी माल-मिल्कियत इकट्ठी करो, दूसरे को नीचा दिखाकर भी बड़े बनो... ऐसी निरी मूर्खता भरी जा रही है!'

इसीलिए गुरु की बड़ी भारी महिमा है! गुरुज्ञान की बड़ी भारी महिमा है! श्रीरामचंद्रजी गुरुकुल में पढ़ते थे तो ऐसी सुंदर पढ़ाई थी कि रामचंद्रजी लक्ष्मण को संकेत करते थे कि सामनेवाला पक्ष हारने की कगार पर है। लक्ष्मण समझ जाते थे इशारे से, तो जान-बूझकर लक्ष्मण हारते, रामजी हारते, उनके साथी हारते और सामनेवाला जीत लेता। इनको संतोष होता कि हम हारकर भी उनको प्रसन्न कर रहे हैं, आत्मशांति है! दोनों पक्षों में प्रसन्नता होती। और आजकल क्या है? कुछ भी करो, झूठ-कपट करके भी सामनेवाले को हराओ और पुरस्कार ले लो। हारनेवाले भी दुःखी, जीतनेवालों में भी निरी मूढ़ता बढ़ायी जाती है। इससे तो तनाव बढ़ेगा, अशांति बढ़ेगी, भ्रष्टाचार बढ़ेगा, घमंड और अहंकार बढ़ेगा। मनुष्य मनुष्य को सतानेवाला हो जायेगा। ऐसी विद्या अंग्रेजों की परम्परा से हमारे देश में चल पड़ी है।

पहले ऋषि-मुनियों की बहुत ऊँची विद्या पढ़ायी जाती थी। सभी लोग सुख-शांति से जीते थे। घर में ताला नहीं लगाना पड़ता था। अभी तो ताला लगाओ, ताले के ऊपर दूसरा ताला लगाओ फिर भी सुरक्षा नहीं। बैंक में खाता खुलवाओ फिर भी नकली हस्ताक्षर से कुछ-का-कुछ हो जाता है। यह विद्या ऐसी है कि बोफोर्स घोटाला करो, हवाला कांड करो, 2G घोटाला करो, कोयला घोटाला करो लेकिन अपने को बड़ा बनाओ। बड़े ठग बन जाते हैं, बड़े शोषक बन जाते हैं और कितना भी धन और बड़ा पद पा लिया किंतु भूख नहीं मिटती। एक-दूसरे को गिराते, लड़ते-लड़ते बूढ़े होकर मर जाते हैं फिर प्रेत होकर भटकते रहते हैं। मूर्खता ही तो है!

सा विद्या या विमुक्तये।

असली विद्या तो वह है जो आपको विकारों से, दुःखों से, चिंताओं से, जन्म-मरण से, शोक से रहित करके आत्मा-परमात्मा से एकाकार करे।

दुर्लभो मानुषो देहो देहीनां क्षणभंगुरः।
तत्रापि दुर्लभं मन्ये वैकुण्ठप्रियदर्शनम्॥

'मनुष्य-देह मिलना दुर्लभ है। वह मिल जाय तो भी क्षणभंगुर है। ऐसी क्षणभंगुर मनुष्य-देह में भी

भगवान के प्रिय संतजनों का दर्शन तो उससे भी अधिक दुर्लभ है।'

मनुष्य-जीवन बड़ी मुश्किल से मिला है। इसे 'हा-हा, ही-ही', डायलॉगबाजी या फिल्मबाजी में तबाह नहीं करना है। कब मर जायें, कहाँ मौत हो जाय कोई पता नहीं। उससे भी ज्यादा दुर्लभ है परमात्मा के प्यारे संतों का दर्शन-सत्संग। संतों के दर्शन-सत्संग के बाद भी अगर डायलॉग और फिल्म अच्छी लगती है तो डूब मरो ! बिल्कुल देर ही मत करो। विवेक में डूबो। पानी में डूबेंगे तो फिर मछली बनेंगे, मेढ़क बनेंगे। इसीलिए ज्ञान में डूबो, भगवान की पुकार में डूबो, भगवान की शरण में डूबो।

'भविष्य में मेरा क्या होगा ?' इसकी चिंता न करो। चिंता करनी है तो इस बात की करो कि 'सुख-दुःख से हम अप्रभावित कैसे रहें ? सादगी से कैसे जियें ? सच्चाई और स्नेह से सम्पन्न कैसे हों ? बिना वस्तुओं, व्यक्तियों व सुविधाओं के स्वनिर्भर कैसे रहें ? और अपने स्व से, 'मैं'स्वरूप परमात्मा से कैसे मिलें ?' ऐसा प्रयत्न करना चाहिए अन्यथा 'ही-ही, हू-हू' करते हुए जवानी चली जायेगी। इसीलिए अब घमंड करके मत जियो, अक्ल से जियो, व्रत, नम्रता, तप और संयम से जियो। अपनी गलती को खोज-खोज के निकालो और भगवान को अपना मानो। अगर गलती नहीं निकलती है तो उसे पुकारो : 'हे भगवान ! मेरे मन में यह गलती है, आप कृपा करो।'

अपना भाव, कर्म और ज्ञान शुद्ध होना चाहिए। ज्ञान शुद्ध होगा तो लोफर-लोफरियों के चित्र अच्छे नहीं लगेंगे। लौकिक ज्ञान भ्रामक स्थिति में उलझा सकता है। आधिदैविक ज्ञान आधिदैविक आकर्षणों में फँसा सकता है। लेकिन आत्मा-परमात्मा का ज्ञान व भाव और आत्मा-परमात्मा की प्रीति के लिए किये हुए कर्म आपको नैष्कर्म्य सिद्धि (निष्कर्म, निर्लिप्त परमात्म-तत्त्व) में, भगवद्भाव में स्थित कर देंगे और 'भगवान का आत्मा और मेरा आत्मा एक है' ऐसा आपमें ईश्वरीय संकल्प ला देंगे, बिल्कुल पक्की बात है !

गीता दर्शन

मनुष्य का वास्तविक स्वभाव सुख है इसलिए वह सुख चाहता है। दुःख मनुष्य का स्वभाव नहीं है इसलिए वह दुःख नहीं चाहता। जैसे, मुँह में दाँत स्वाभाविक हैं। कभी हमें ऐसा नहीं होता कि इन पत्थर के टुकड़ों को निकालकर फेंक दें। लेकिन यदि दाँतों में तिनखा फँस जाता है तो जीभ बार-बार वहाँ जाती है और उसे निकालने की कोशिश करती है क्योंकि वह अस्वाभाविक है। ऐसे ही तुम्हारा सहज स्वभाव सुखस्वरूप है अतः जब दुःख आता है तो तुम उसे निकालने के लिए तत्पर हो जाते हो। जैसे दाँतों में तिनखा अस्वाभाविक लगता है वैसे ही हृदय में दुःख अस्वाभाविक लगता है और यह दुःख आता रजो-तमोगुण की प्रधानता से।

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं : अभयं सत्त्वसंशुद्धि...

जीवन में निर्भयता आनी ही चाहिए। अत्याचार, अनाचार एवं दुराचार के सामने बोलना पड़े तो बोल देना चाहिए। अगर डरपोक होकर गुण्डा तत्त्व को पोषण देते हैं तो हम शोषित किये जाते हैं, दबाये जाते हैं, पिसे जाते हैं। 'हमको क्या ? हमको क्या ?' ऐसा करते-करते सिकुड़ते जाते हैं और इस सिकुड़ान के कारण गुण्डा तत्त्व बड़े होते जाते हैं। नहीं... नहीं...

भगवान कहते हैं कि जीवन में से भय का सर्वथा अभाव कर दो और निर्भयता लाओ। निर्भय वही हो सकता है जो दूसरों को भयभीत न करे। निर्भय वही हो सकता है जो निष्पाप होने को तत्पर हो जाये। निर्भयता एक ऐसा सद्गुण है कि उसे परमात्मतत्त्व तक पहुँचने की शक्ति आती है।

प्रसंग माधुरी

गणेशजी का श्रीविग्रह देता सुंदर प्रेरणाएँ

भगवान शिव ने की सर्जरी

जो इन्द्रिय-गणों का, मन-बुद्धि गणों का स्वामी है, उस अंतर्यामी विभु का ही वाचक है 'गणेश' शब्द। **'गणानां पतिः इति गणपतिः ।'** उस निराकार परब्रह्म को समझाने के लिए ऋषियों ने और भगवान ने क्या लीला की है ! कथा आती है, शिवजी कहीं गये थे । पार्वतीजी ने अपने योगबल से एक बालक पैदा कर उसे चौकीदारी करने रखा । शिवजी जब प्रवेश कर रहे थे तो वह बालक रास्ता रोककर खड़ा हो गया और शिवजी से कहा : ''आप अंदर नहीं जा सकते।''

शिवजी ने त्रिशूल से उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। पार्वतीजी ने सारी घटना बतायी। शिवजी बोले : ''अच्छा-अच्छा, यह तुम्हारा मानसपुत्र है । चलो, तुम्हारा मानसपुत्र है तो हम भी इसमें अपने मानसिक बल की लीला दिखा देते हैं।'' शिवजी ने अपने गणों को कहा : ''जाओ, जो भी प्राणी मिले उसका सिर ले आओ।'' गण हाथी का सिर ले आये और शिवजी ने उसे बालक के धड़ पर लगा दिया। सर्जरी की कितनी ऊँची घटना है ! बोले, 'मेरी नाक सर्जरी से बदल दी, मेरा फलाना बदल दिया...' अरे, सिर बदल दिया तुम्हारे भोले बाबा ने ! कैसी सर्जरी है ! और फिर इस सर्जरी से लोगों को कितना समझने को मिला !

समाज को अनोखी प्रेरणा

गणेशजी के कान बड़े सूपे जैसे हैं। वे यह प्रेरणा देते हैं कि जो कुटुम्ब का बड़ा हो, समाज का बड़ा हो उसमें बड़ी खबरदारी होनी चाहिए। सूपे में अन्न-धान में से कंकड़-पत्थर निकल जाते हैं । असार निकल जाता है, सार रह जाता है । ऐसे ही सुनो लेकिन सार-सार ले लो। जो सुनो वह सब सच्चा न मानो, सब झूठा न मानो, सार-सार लो । यह गणेशजी के बाह्य विग्रह से प्रेरणा मिलती है।

गणेशजी की सूँड़ लम्बी है अर्थात् वे दूर की वस्तु की भी गंध ले लेते हैं। ऐसे ही कुटुम्ब का जो अगुआ है, उसको कौन, कहाँ, क्या कर रहा है या क्या होनेवाला है इसकी गंध आनी चाहिए।

हाथी के शरीर की अपेक्षा उसकी आँखें बहुत छोटी हैं लेकिन सूई को भी उठा लेता है हाथी। ऐसे ही समाज का, कुटुम्ब का अगुआ सूक्ष्म दृष्टिवाला होना चाहिए। किसको अभी कहने से क्या होगा ? थोड़ी देर के बाद कहने से क्या होगा ? तोल-मोल के बोले, तोल-मोल के निर्णय करे।

भगवान गणेशजी की सवारी क्या है ? चूहा !

इतने बड़े गणपति चूहे पर कैसे जाते होंगे ? यह प्रतीक है समझाने के लिए कि छोटे-से-छोटे आदमी को भी अपनी सेवा में रखो। बड़ा आदमी तो खबर आदि नहीं लायेगा लेकिन चूहा किसीके भी घर में घुस जायेगा। ऐसे छोटे-से-छोटे आदमी से भी कोई-न-कोई सेवा लेकर आप दूर तक की जानकारी रखो और अपना संदेश, अपना सिद्धांत दूर तक पहुँचाओ। ऐसा नहीं कि चूहे पर गणपति बैठते हैं और घर-घर जाते हैं। यह संकेत है आध्यात्मिक ज्ञान के जगत में प्रवेश पाने का।

गणेश-विसर्जन का आत्मोन्नतिकारक संदेश

गणेशजी की मूर्ति तो बनी, नाचते-गाते विसर्जित भी की, निराकार प्रभु को साकार रूप में मानकर फिर साकार आकृति भी विसर्जित हुई लेकिन इस भगवद्-उत्सव में नाचना-कूदना-झूमना तुम्हारे दिल में कुछ दे जाता है। रॉक और पॉप म्यूजिक पर जो नाचते-कूदते हैं, उनको भी कुछ दे जाता है जैसे - सेक्सुअल आकर्षण, चिड़चिड़ा स्वभाव, जीवनशक्ति का ह्रास... लेकिन गजानन के निमित्त जो नाचते-गाते-झूमते हैं, उन्हें यह उत्सव सूझबूझ दे जाता है कि सुनो सब लेकिन छान-छानकर सार-सार ही मन में रखो। दूर की भी गंध तुम्हारे पास होनी चाहिए। छोटे-से-छोटे आदमी का भी उपयोग करके अपना दैवी कार्य करो।

गणेश-विसर्जन कार्यक्रम आपको अहंकार के विसर्जन, आकृति में सत्यता के विसर्जन, राग-द्वेष के विसर्जन का संदेश देता है। बीते हुए का शोक न करो। जो चला गया वह चला गया। जो चीज-वस्तु बदलती है उसका शोक न करो। आनेवाले का भय न करो। वर्तमान में अहंकार की, नासमझी की दलदल में न गिरो। तुम बुद्धिमत्ता बढ़ाने के लिए **'ॐ गं गं गं गणपतये नमः'** का जप किया करो और बच्चों को भी सिखाओ। बिल्कुल सुंदर व्यवस्था हो जायेगी !

मिथ्या कलंक से बचें

भाद्रपद मास की शुक्ल चतुर्थी को चंद्रदर्शन निषिद्ध माना गया है। इस वर्ष गणेश चतुर्थी (९ सितम्बर) के दिन चंद्रास्त रात्रि ९-२८ बजे है। इस समय तक चंद्रदर्शन निषिद्ध है।

अनिच्छा से चंद्र-दर्शन हो जाय तो...

निम्न मंत्र से पवित्र किया हुआ जल पीने से व्यक्ति तत्काल शुद्ध हो निष्कलंक बना रहता है।

सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः।

सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः॥

'सुंदर, सलोने कुमार ! इस मणि के लिए सिंह ने प्रसेन को मारा है और जाम्बवान ने उस सिंह का संहार किया है, अतः तुम रोओ मत। अब इस स्यमंतक मणि पर तुम्हारा ही अधिकार है।'

(ब्रह्मवैवर्त पुराण, अध्याय : ७८)

स्यमंतक मणि की कथा 'भागवत' के १०वें स्कंध के ५६-५७वें अध्याय में आती है। उसका वाचन या श्रवण भी कलंक से रक्षा करता है।

बाल संस्कार माला

कलियाँ महकें बन के फूल, संस्कार बनते महानता का मूल

पटना (बिहार) में एक संयमी, सदाचारी सज्जन रहते थे - बाबू रामदास। वे सरकारी नौकरी में ऊँचे पद पर थे। उनका पाँच वर्ष का पुत्र था कालिदास। रामदासजी अपने पुत्र में अच्छे संस्कारों के सिंचन के प्रति बहुत सजग रहते थे। वे रुपये-पैसे से भी अधिक सद्गुण-सम्पदा को महत्त्वपूर्ण मानते थे। कालिदास को परिवार के बड़े-बुजुर्गों द्वारा महापुरुषों की संयम, सदाचार, सत्यनिष्ठा जैसे सद्गुणों को सुदृढ़ करनेवाली कहानियाँ बतायी जाती थीं। रामदासजी ने कालिदास को चॉकलेट्स आदि की लोलुपता में फँसने नहीं दिया था बल्कि अच्छी-अच्छी पुस्तकें, सत्साहित्य पढ़ने का चस्का लगा दिया था। कालिदास ने जब सच्चाई की महिमा पढ़ी-सुनी तो उसे यह सद्गुण बहुत भा गया। एक संत के उपदेशों में उसने पढ़ा : 'सच्चाई ही खरी कमाई है। जिसे जीवन के सार सत्य के रहस्य को जानना हो, उसे यही कमाई करनी चाहिए।'

बस, अब तो उसने संकल्प ले लिया कि 'आज से मैं हमेशा सत्य बोलूँगा व सच्चाई से ही जिऊँगा।'

बाबू रामदासजी ने अपने घर के बाहर बड़ी सुंदर फुलवारी लगायी हुई थी। उनके बनाये नियम के अनुसार वहाँ के फूलों को तोड़ना सभीके लिए सर्वथा निषिद्ध था। एक दिन घर की नौकरानी कालिदास को टहलाने वहाँ ले गयी। सुंदर फुलवारी देख बालक फूल तोड़ने की जिद करने लगा। नौकरानी के मना करने पर भी उसने फुलवारी के सारे गुलाब के फूल तोड़ लिये। घर आकर उन फूलों को एक कोने में रखकर वह कमरे में चला गया।

कुछ देर बाद जब रामदासजी बाहर आये तो जमीन पर गुलाब के फूलों का ढेर देखकर नौकरानी को खूब डाँटने लगे। वह बेचारी चुपचाप खड़ी थी। आवाज सुन बालक बाहर आया और निर्दोष को डाँट मिलते देख बोल पड़ा : ''पिताजी ! फूल इन्होंने नहीं, मैंने तोड़े थे। इन्होंने तो मुझे बहुत मना किया पर मैं तोड़े जा रहा था। गलती मेरी है।''

अपने नन्हे पुत्र का सत्य बोलने का साहस देख रामदासजी बहुत प्रसन्न हुए। उस पाँच वर्ष के बालक की यह पहली खरी कमाई थी। उसे गोद में उठाकर बोले : ''शाबाश बेटे ! तुमने मार पड़ने के डर को महत्त्व न देकर सत्य बोलने का साहस किया है। तुम्हारी सच्चाई के आगे इन फूलों का कोई मूल्य नहीं है। तुम हमेशा ऐसे ही सच बोलते रहना। सत्य में बड़ा बल है।

परमात्मा सच बोलनेवाले की कदम-कदम पर सहायता करते हैं।'' वे कुछ देर शांत हो गये फिर आशीर्वाद देते हुए बोले : ''बेटे ! तुम्हारी सत्यनिष्ठा से मुझे बहुत प्रसन्नता व शांति मिली है। इसलिए आज से मैं तुम्हें 'सत्यव्रत' नाम से पुकारूँगा।''

कितने बुद्धिमान एवं कुशल अभिभावक थे रामदासजी ! जितनी उन्हें बाहरी फूलों के बगीचे सींचने-महकाने में खुशी होती थी, उससे भी अधिक उन्हें बालकों में सद्गुण-सुसंस्काररूपी भीतरी फूलों को खिलाने व पोषित करने में प्रसन्नता का अनुभव होता था।

रामदासजी की पुष्प-वाटिका की छोटी-सी सुंदर कली 'सत्यव्रत' समय पाकर विश्व-उपवन को भारतीय संस्कृति की महक से महकानेवाले एक सुविकसित पुष्प में परिणत हुई। सत्यव्रत की सत्यनिष्ठा के प्रभाव से वेदों और शास्त्रों के गूढ़, रहस्यमय अर्थ भी उसके हृदय में प्रकट होने लगे। एक समय का नन्हा-सा बालक कालिदास आगे चलकर वेद-वेदांगों के महान विद्वान पं. सत्यव्रत सामश्रमी के नाम से विख्यात हुआ और हिन्दू धर्म के छः वेदांगों में से एक 'निरुक्त' जैसे महान ग्रंथ पर उन्होंने टीका लिखी।

ऐसे सत्यनिष्ठ दृढ़व्रती बालक को यदि किन्हीं आत्मवेत्ता महापुरुष का सान्निध्य मिल जाता तो वह ब्रह्मवेत्ता महापुरुष भी हो सकता था।

आपके बेटे-बेटियों में भी कोई-न-कोई सद्गुण जरूर होंगे। क्या आप भी रामदासजी की तरह बच्चों को उत्साहित करके उन सद्गुणों को पोषित-संवर्धित करेंगे ? इससे न केवल आपका परिवार-पड़ोस सुसंस्कारी बनेगा अपितु देश को भी अच्छे नागरिक प्रदान करने की महती सेवा आपके द्वारा हो जायेगी। देशभर में बापूजी के अनगिनत साधक १७,००० बाल संस्कार केन्द्रों आदि के द्वारा यह राष्ट्रसेवा बखूबी कर रहे हैं।

ऐसा कहीं देखा है ?

आश्रम की श्योपुर गौशाला (म.प्र.) हेतु गाड़ी के लिए सरकार ने ४ लाख रुपये दिये। पूज्य बापूजी ने वापस करवा दिये। चल-चिकित्सालय के लिए केन्द्र सरकार ने पैसे दिये, बापूजी ने उसे भी लेने से इनकार करवा दिया। अभी उत्तराखंड में बादल फटा, हिमालय में कितनी तबाही हुई ! आश्रम के राहत सेवाकार्यों में मददस्वरूप पैसे देने के लिए कई लोगों के फोन आये कि 'आपका एकाउंट नम्बर दीजिये।' पर बापूजी ने मना करवा दिया।

पूज्य बापूजी किसी सरकार की मदद माँगते नहीं और वे मदद देती हों तो उसका स्वीकार नहीं करते। इतना ही नहीं, लगातार ५० वर्षों से बापूजी समाज की सेवा में रत हैं लेकिन आज तक आम जनता से भी कभी किसी सेवा के लिए चंदा नहीं लिया गया। अपने सेवाकार्यों के लिए सरकार की मदद नहीं लेते अपितु सरकार को उसके सेवाकार्यों में मदद देने के लिए तैयार रहते हैं।

रोहतक में २९ जून व ३० जून को आयोजित सत्संग में पूज्य बापूजी ने हरियाणा सरकार से कहा था : ''हरियाणा सरकार यदि उत्तराखंड में आपदा-पीड़ित २५ गाँव गोद लेती है, कोई सेवाकार्य करती है तो हम तन-मन-धन से उसमें भागीदार होने के लिए तैयार हैं।''

कैसे हैं ये निष्काम कर्मयोगी महापुरुष ! पैसे लेने की तो बात नहीं करते और सेवा करने में पीछे नहीं हटते। और दिखावे से भी दूर रहते हैं। ऐसा आपने कहीं देखा हो तो बताओ !

ज्ञान गंगोत्री

प्रेम में माँग नहीं होती

- पूज्य बापूजी

नृसिंह भगवान ने जब हिरण्यकशिपु को मारा तब वे बड़े कोप में थे । लक्ष्मीजी भी उन्हें शांत न कर सकीं, ऐसा उग्र रूप था । ब्रह्माजी ने प्रह्लाद से कहा : ''बेटा ! अब तुम्हीं भगवान के पास जाकर उन्हें शांत करो ।''

प्रह्लाद ने पास में जाकर भगवान की स्तुति की । प्रह्लाद को देखते ही भगवान वात्सल्यभाव से भर गये । माथा सूँघने लगे, स्नेह करने लगे । नृसिंह भगवान कहते हैं : ''प्रह्लाद ! मैं तुम पर अत्यंत प्रसन्न हूँ । तुम्हारी जो इच्छा हो, मुझसे माँग लो ।''

प्रह्लाद क्या बोलता है : ''प्रभु ! आपसे कुछ माँगने के लिए मैंने आपको नहीं चाहा था । आपसे कुछ माँगूँ तो माँगी हुई चीज बड़ी हो गयी, आप छोटे हो गये । उस चीज की महत्ता हो गयी ।''

जो गुरु से कुछ माँगता है तो गुरु से स्नेह नहीं करता, अपनी वासना को माँगता है । भगवान से माँगता है तो भगवान को स्नेह नहीं करता अपनी ख्वाहिश का गुलाम है ।

प्रह्लाद बोलता है : ''प्रभु ! आपसे बढ़कर क्या है जो मैं माँगूँ ? अगर फिर भी आप देना चाहते हो तो इतनी कृपा कर दीजिये कि मेरे हृदय में कभी किसी कामना का बीज अंकुरित ही न हो ।'' भगवान ने प्रह्लाद को हृदय से लगा लिया ।

इच्छा बहुत गंदी होती है । माँगें आदमी को तुच्छ बना देती हैं । गहरी नींद में कोई माँग नहीं रहती है तो कितनी शांति रहती है ! सुबह उठते हैं, जब तक माँग शुरू नहीं हुई तब तक बड़ी शांति रहती है । जितनी गहरी और ज्यादा माँग, उतना आदमी तुच्छ, धोखेबाज, कूड़-कपटी !

सभी माँगों को हटाने के लिए भगवान को पाने की माँग रख दो बस । जब सब माँगें हट जायेंगी तो भगवान की माँग भी हट जायेगी क्योंकि भगवान स्वतः बेपर्दा हो जायेंगे ।

सूरदास अकेले कहीं जा रहे थे । रास्ते का ज्ञान नहीं था । भीतर कोई माँग नहीं थी । **तेरी मर्जी पूरण हो...** तो श्रीकृष्ण आये और सूरदास का हाथ पकड़ लिया ।

बोले : ''चलो, मैं दिखाता हूँ रास्ता ।'' कृष्ण ने हाथ पकड़ा तो सूरदास समझ गये । बाहर की आँखें तो नहीं थीं लेकिन समझ गये कि ये हाथ कोई साधारण हाथ नहीं हैं । जो सबमें रम रहा है, सबको आकर्षित करता है, कभी कृष्ण बनता है, कभी राम बनता है, कभी अंतरात्मा हो के प्रेरणा देता है, वही है ।

सूरदास का हाथ कृष्ण ने पकड़ा था और वे अपना हाथ छुड़ाकर कृष्ण को पकड़ने जा (शेष पृष्ठ १९ पर)

दुःख एवं मुसीबतों को बुलाना हो तो भयभीत रहो और उनकी पूँछें दबानी हों तो निर्भय बनो।

स्मृति व इच्छाशक्तिवर्धक प्राणायाम

लाभ : (१) स्मृतिशक्ति गजब की बढ़ेगी।

(२) इच्छाशक्ति का विकास होगा।

(३) शरीर के कई रोग भी मिटेंगे और मानसिक तनाव भी भाग जायेंगे।

विधि : जैसे सिद्धासन में बैठते हैं ऐसे ही बायें पैर की एड़ी गुदाद्वार पर रख दें, दाहिने पाँव की एड़ी बायें पैर की जंघा पर लगा दें। ठोड़ी को कंठकूप से लगा दें, इसको 'जालंधर बंध' बोलते हैं। आँखें बंद कर दें व गहरा श्वास लें, इसको पूरक बोलते हैं। फिर श्वास रोकें, इसको कुम्भक कहते हैं और फिर श्वास छोड़ें, यह रेचक कहलाता है। तो पूरक, कुम्भक व रेचक का अभ्यास करें। यह अभ्यास १५-२०-३० मिनट से एक घंटे तक बढ़ा सकते हैं।

थकान दूर करने के लिए : सुखद प्राणायाम

लाभ : (१) कैसी भी थकान हो, इस प्राणायाम से भाग जायेगी और सुख व चैन का अनुभव होगा।

(२) खिन्नता चली जायेगी, स्वभाव में सुख आयेगा।

(३) सामान्य प्राणायाम से जो थकान पैदा होती है, वह दूर करने के लिए भी इसे किया जाता है।

विधि : गहरा, लम्बा श्वास लें व जितनी देर सहज में रोक सकें रोकें, बलपूर्वक नहीं। फिर मुँह से वह श्वास रुक-रुक के ऐसे छोड़ें जैसे होंठों से व्हिसल (सीटी) बजाते हैं। ऐसे ३ से अधिक बार में रुक-रुक के व बलपूर्वक श्वास छोड़ें। यह हुआ एक प्राणायाम। ऐसे ५-७ प्राणायाम करें।

परिप्रश्नेन...

प्रश्न : हमें बार-बार भगवान की महिमा सुनने को मिलती है, बार-बार सत्संग सुनते हैं फिर भी ईश्वरप्राप्ति का लक्ष्य अभी निर्धारित नहीं हो पाया, निश्चय नहीं कर पाया, इसका क्या कारण है ?

पूज्य बापूजी : 'ईश्वर के सिवाय कहीं भी मन लगाया तो अंत में रोना ही पड़ेगा।' - मन को समझाया करो। 'ईश्वर की ओर' पुस्तक पढ़ा करो। 'श्री योगवासिष्ठ महारामायण' पढ़ने को मिल जाय तो अपने-आप लक्ष्य निर्धारित हो जायेगा। लक्ष्य निर्धारित किये बिना उन्नति का रास्ता नहीं खुलता। कभी-कभी श्मशान में जाओ और अपने मन को बताओ कि 'आखिर यहीं आना है।' मैं ऐसे ही करता था। मेरे पिताजी का शरीर छूट गया था न, मैं लगभग दस साल का था। कंधा देकर श्मशान में ले गया, फिर अपने मन को समझाया कि 'इतने बड़े होकर, बूढ़े हो के मरेंगे तो ऐसे... और अभी मर जायेंगे तो ?' पूछा किसीसे : "अगर अभी मर जायें तो ?" उसने बच्चों का श्मशान दिखाया कि यहाँ दफना देते हैं उनको। तो फिर जो बच्चों का श्मशान था, उधर जाकर बैठता था। अपने मन को बोलता था, 'अभी मरेगा तो इधर, बाद में मरेगा तो जहाँ पिताजी जलाये गये...'- आखिर यह है संसार !

तो संसार की नश्वरता और आत्मा की अमरता को याद करके अपना ईश्वरप्राप्ति का लक्ष्य बना लेना चाहिए, मजबूत कर लेना चाहिए। संतों का जीवन-चरित्र पढ़ने को मिले, श्मशान में जाने को मिले तो अच्छा है। माइयाँ तो नहीं जायें, अपशकुन होता है। आप 'ईश्वर की ओर' पुस्तक पढ़ो तो उसमें श्मशान-यात्रा का वर्णन है।

घर परिवार

चोरी हो तो ऐसी...

राजस्थान के सवाई माधोपुर जिले में खंडार तहसील के सींगोर गाँव की एक घटित घटना है । दो भाई थे पन्नालाल छोटा था, धन्नालाल बड़ा था । दोनों भाइयों में प्रेम तो था लेकिन पत्नियों के कारण अलग होना पड़ा । पन्नालाल की पत्नी जरा सुख की लोलुप थी । वह सोचती, 'जेठानी के बच्चों का कुछ भी हो, अपने बच्चों को सुखी करूँ और मैं भी सुखी रहूँ । घर में मेरी ही चले ।' वह दूसरों का खयाल नहीं रखती थी । छोटे भाई ने कहा : ''भाई ! अब रोज-रोज के झगड़े मिटाने हैं तो अलग हो ही जायें ।''

दोनों भाई अलग हो गये । मकान और खेत आधा-आधा बँट गया । बड़े भाई का तजुर्बा बड़ा था खेत-खली का । उसे छोटी-छोटी बातों की भी पहचान थी । बड़ा भाई तो अमीर हो गया । छोटे भाई की औरत झगड़ालू थी, झगड़ा वही करती थी । जो झगड़ा करता है न, उसके घर की लक्ष्मी रूठ जाती है । तो छोटा भाई गरीब हो गया ।

''मेरे पिताजी बीमार हैं ।'' कहकर छोटे भाई की पत्नी अपने पति को ससुराल ले जाना चाहती थी । दोनों भाइयों के खेत पास-पास में थे । छोटे भाई ने बड़े भाई को कहा : ''भुट्टे हो गये हैं, ढेर लगा है । भुट्टों में से मकई निकले तब तक आप मेरे भुट्टों का जरा खयाल रखना । मुझे कुछ दिन लगेंगे ।''

बड़े ने कहा : ''हाँ भैया ! तुम जाओ, चिंता मत करो ।''

ढेर देखकर बड़े को लगा कि 'छोटा तो कंगाल हो गया बेचारा ! उसकी पत्नी सुख के लालच में दूसरों को दुःखी करके स्वयं भी परेशान है, मेरे भाई को भी परेशान कर दिया है । एक घर में से दो कर दिये । खेत में आये भुट्टे तो थोड़े-से हैं, सालभर इसके घर का गुजारा भी नहीं होगा । फिर कहीं से उधार लायेगा तो ब्याज-ब्याज में खेत बेचना पड़ेगा । अब औरतें दोनों की ऐसी हैं कि मेरी पत्नी और मेरा बेटा देखेंगे कि मैं छोटे भाई को कुछ दे रहा हूँ तो भाई के लिए मुसीबत कर देंगे । तो अब क्या करें ?'

रात को उठा और बड़ा तसला लिया । अपना जो ढेर था भुट्टों का, उसमें से तसला भर-भर के छोटे भाई के ढेर में डालने लग गया । पड़ोसी खेतवाले को आवाज आयी । वह देखता रहा और सुबह पूछा : ''रात के १२ बजे से सुबह तक इतनी हमाली करके तुमने अपने भुट्टे छोटे भाई के ढेर में क्यों डाले ?''

धन्नालाल : ''घर पर तो मैं भाई की मदद नहीं कर सकता हूँ और उसके सामने भी मदद करूँगा तो लेगा नहीं इसलिए मैं चोरी-छुपे कर रहा हूँ ।''

पड़ोसी चकित होकर बोला : ''चोरी भी कैसी विलक्षण कि अपनी चीज दूसरे को चोरी-छुपे देना ! भाई राम और भरत तो थे तब थे लेकिन धन्नालाल और पन्नालाल तुम धन्य हो !''

अब धन्नालाल को पता ही नहीं कि मैं भुट्टों के तसले भरके डालूँगा और बापूजी मेरी सराहना करेंगे लेकिन योग्य बात तो सराहनीय होती है । जो भाई भाई को नोचकर सुखी होना चाहता है, वह दोनों के लिए दुश्मनी पैदा करता है । भाई हों तो ऐसे हों कि चोरी-छुपे एक-दूसरे को मदद करें ।

तुम्हारे आत्मा में कितना सामर्थ्य है, कितनी शक्ति है ! अगर योग-सामर्थ्य, ध्यान के अभ्यास से आप अपनी गहराई में जाओ तो आपको ताज्जुब होगा कि 'मैं फालतू में गिड़गिड़ा रहा था - नौकरी मिल जाय, नौकर बन जाऊँ... प्रमाणपत्र मिल जाय, ऐसा बन जाऊँ - वैसा बन जाऊँ...'

अरे, तू जो है उसमें गोता मार !
आठवें अर्श तेरा नूर चमकदा, होर भी उचा हो ॥
फकीरा ! आपे अल्लाह हो ।

पर्व मांगल्य

दुःखों की कमी नहीं फिर भी दुःखी नहीं !

- पूज्य बापूजी

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी : २८ अगस्त)

श्रीकृष्ण के जीवन में आध्यात्मिक उन्नति व वैदिक ज्ञान ऐसा था कि नास्तिक लोग भी उनको योगिराज, नीतिज्ञशिरोमणि, उच्च दार्शनिक मानते थे । मुसलमानों में भी रसखान, ताज बेगम, रेहाना तैय्यब और रहीम खानखाना आदि लोगों ने श्रीकृष्ण की भक्ति और प्रशंसा करके अपना जीवन धन्य किया।

श्रीकृष्ण संघर्षों का तगड़ा अनुभव करते हुए संघर्षों के बीच कैसे मुस्कराते रहे, यह उनकी लीलाओं और जीवन-संदेश में है । श्रीकृष्ण के आने के निमित्त माँ-बाप को कारावास मिला, उनके छः भाई मारे गये और स्वयं श्रीकृष्ण जन्मे हैं कारागृह में ! जन्मते ही पराये घर लिवाये गये । श्रीकृष्ण अष्टमी को प्रकटे हैं और चौदस को पूतना जहर भरकर आयी । जहरमिश्रित दूध पीना पड़ा । दो महीने के हुए तो शकटासुर आ गया, कभी धेनुकासुर आया, कभी बकासुर आया और कृष्ण को निगल गया । गायें चरानी पड़ीं, नृत्य सिखानेवाले तोक का तमाचा सहना पड़ा, कंस मामा का पूरा राजशासन विरोधी था । १७ बार शत्रु को मार भगाया परंतु १८वीं बार स्वयं भागना पड़ा । एक ही वस्त्र पर कई महीने रहे और फिर छुपकर द्वारिका बसायी । न जाने कितने उपद्रव हुए लेकिन आधिभौतिक उपद्रवों को श्रीकृष्ण ने महत्त्व नहीं दिया तो आपको भी महत्त्व नहीं देना चाहिए । कृष्ण अपने आनंदस्वभाव में रहे तो आपको भी आनंदस्वभाव में रहना चाहिए । कृष्ण अपने ज्ञान-प्रकाश में जिये तो आपको भी ज्ञान-प्रकाश में जीना चाहिए।

'महाभारत' में आता है कि श्रीकृष्ण के जीवन में दुःख के निमित्तों की कमी नहीं है लेकिन शोक की एक रेखा भी नहीं है । सदा हँसते रहे, मुस्कराते रहे, गीत गाते रहे । कैसी भी परिस्थितियाँ आयीं लेकिन भगवान कृष्ण उन परिस्थितियों को सत्य मान के मुसीबतों का हौवा बनाकर अपने सिर

पर ढोते नहीं थे बल्कि उन पर नाचते थे। महाभारत का युद्ध हो रहा है पर श्रीकृष्ण की बंसी बज रही है। कुछ-के-कुछ आरोप लग रहे हैं और बंसी बज रही है। जयकारे लग रहे हैं पर चित्त में समता है।

सुख-दुःख में कैसे जियें ? सुख-दुःख को साधन कैसे बनायें ? यह सब श्रीकृष्ण के अनुभव की पोथी 'गीता' में है। गीता श्रीकृष्ण के अनुभवजन्य ज्ञान की स्मृति (स्मृति ग्रंथ) है। गीता किसी सम्प्रदाय अथवा मजहब की किताब नहीं है। इसमें श्रीकृष्ण के द्वारा जितना बुद्धि का आदर किया गया है, ऐसा और किसी जगह पर नहीं है। गीता कैसी भी परिस्थिति में अपनी बुद्धि को डाँवाडोल न होने देने की सीख देती है।

जैसे अर्जुन के जीवन में उतार-चढ़ाव व दुःख आये लेकिन भगवान के आगे दुखड़ा रोया तो वह दुःख भी 'विषादयोग' हो गया। अर्जुन दुःखी हुए, बोले : 'मेरा जीवन चलेगा ही नहीं... ।' सारी मनोवृत्तियाँ शोक से भर गयीं और उत्साह ठंडा हो गया लेकिन श्रीकृष्ण ने ज्ञान तथा उत्साह भर दिया तो महाभारत का युद्ध भी आराम से जीत लिया।

श्रीकृष्ण बहुत ऊँची बात बताते हैं कि दुष्कृत और सुकृत से आप ऊपर उठ जाओ। ऐसा और कोई मार्ग नहीं है, जैसा श्रीकृष्ण बता रहे हैं। पैसे चले गये तो दुःख हो गया और आ गये तो सुख हो गया लेकिन गीता तो कहती है - जो आया वह भी स्वप्नतुल्य, गया वह भी स्वप्नतुल्य।

श्रीकृष्ण आनंद-अवतार हैं। 'यह खाऊँ, यह भोगूँ, यह करूँ, यह न करूँ...'- ऐसी कोई चाह उनको नहीं है इसलिए कृष्ण आनंद में हैं। कृष्ण खुले आनंद में हैं तो उनको देखकर गौएँ, बछड़े और गोप-गोपियाँ आनंदित हो जाते हैं।

देवकी की कोख से श्रीकृष्ण जन्मे हैं लेकिन जितनी प्रीति यशोदा को मिलती है उतनी देवकी को नहीं। देवकी शरीर से जन्म देती है लेकिन यशोदा तो हृदयपूर्वक यश दे रही है। यशोदा तो आप बन सकते हैं। जरूरी नहीं कि आपके पेट से भगवान पैदा हों, आपके हृदय में भगवान अभी भी प्रकट हो सकते हैं।

वाह ! वाह !! हर परिस्थिति में वाह ! भगवान को यश दो तो आपकी बुद्धि यशोदा हो जायेगी और आत्मकृष्ण तो हैं ही हैं। श्रीकृष्ण जो आकृति लेकर आये उतने ही श्रीकृष्ण नहीं हैं, वेदों में श्रीकृष्ण के प्राकट्य से पहले भी 'कृष्ण' का नाम था। जो कर्षित कर दे, आकर्षित, आनंदित, आह्लादित कर दे उस अंतर्यामी विभु परमेश्वर का नाम कृष्ण है।

मनुष्य जितनी ऊँचाई का धनी हो सकता है

साथ में थे । अर्जुन सशरीर स्वर्ग जाते हैं, उर्वशी जैसी अप्सरा के मोह-जाल को ठुकरा देते हैं, स्वयं श्रीकृष्ण उनके रथ की बागडोर सँभालते हैं फिर भी अर्जुन का दुःख नहीं मिटता । जब श्रीकृष्ण कहते हैं :

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत ।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं
स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम् ॥

'हे भारत ! तू सब प्रकार से उस परमेश्वर की ही शरण में जा । उस परमात्मा की कृपा से ही तू परम शांति को तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होगा ।' **(गीता : १८.६२)**

शरीर से जो करो, उस परमात्मा को समझने के लिए करो । मन से जो सोचो, उसके लिए सोचो और बुद्धि से जो निर्णय करो, अपने सत्-चित्-आनंदस्वभाव की तरफ जाने के लिए ही करो तो दुःखों से पार हो जाओगे, जैसे अर्जुन को ज्ञान हो गया - **'नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा...'**

मोह बोलते हैं उलटे ज्ञान को । हम शरीर नहीं हैं लेकिन मानते हैं अपने को शरीर ! मोह सभी व्याधियों का मूल है । 'रामायण' में कहा गया :

मोह सकल ब्याधिन्ह कर मूला ।
तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला ॥

गीता मोह मिटाने की और अपने सच्चिदानंद स्वभाव में जगने की सुंदर युक्तियाँ देती है ।

तो श्रीकृष्ण का प्राकट्य कितना महत्त्वपूर्ण है और कितना रहस्यमय है ! **श्रीकृष्ण की महत्ता समझकर आप श्रीकृष्ण के भक्त हो जाओ इसलिए जन्माष्टमी नहीं है । आप कृष्ण के अनुभव से सम्पन्न होकर निर्दुःख जीवन जियो, मुक्तात्मा, दिव्यात्मा, समाहित आत्मा (शांतात्मा) बनो ।** आप जिस मजहब में हो, जिस इष्टदेव को मानते हों, चाहे आपके इष्टदेव कृष्ण हों, शिव हों, राम हों लेकिन कृष्ण की जीवनलीलाओं से आप अपने जीवन को लीलामय बना लीजिये । आपका जीवन बोझ न हो इसलिए जन्माष्टमी का पर्व है ।

भगवान श्रीकृष्ण के ६४ दिव्य गुण

- पूज्य बापूजी

भगवान श्रीकृष्ण में ६४ दिव्य गुण हैं । **पहला** गुण है **'सुरम्यांगः'**, वे सुंदर अंगवाले हैं । **दूसरा, 'सर्वसल्लक्षणान्वितः'**, समस्त शुभ लक्षणों से युक्त हैं । **तीसरा** गुण है **'रुचिरः'**, अतिशय रुचनेवाले हैं, अपनी कांति से दर्शकों के नेत्रों को आनंद देनेवाले हैं । **चौथा** दिव्य गुण है **'तेजसायुक्तः'** अर्थात् तेजोमय हैं । **पाँचवाँ** है **'बलीयान्'**, भगवान बलवान हैं, पर्वत उठा लिया । **छठा** दिव्य गुण है **'वयसाऽन्वितः'** अर्थात् भगवान सर्वदा किशोर-अवस्थासम्पन्न ही रहते हैं । भगवान नित्य हैं । शरीर नित्य नहीं है, सृष्टि नित्य नहीं है लेकिन भगवान नित्य हैं । जो भगवान में गुण हैं वे ही तुम्हारे में भी हो रहे हैं । तुम भगवान के अविभाज्य अंग हो । **सातवाँ** गुण है **'विविधाद्भुतभाषावित्'** अर्थात् भगवान अनेक अद्भुत भाषाओं का ज्ञान रखते हैं । कोई भी भाषा बोलो, आपके भावों को वे पहले ही जानते हैं । (क्रमशः)

उपासना अमृत

जन्माष्टमी व्रत की महिमा

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी : २८ अगस्त)

ब्रह्माजी सरस्वती को कहते हैं और भगवान श्रीकृष्ण अपने भक्त उद्धव को कहते हैं कि ''जो जन्माष्टमी का व्रत रखता है, उसे करोड़ों एकादशी व्रत करने का पुण्य प्राप्त होता है और उसके रोग, शोक दूर हो जाते हैं ।'' धर्मराज सावित्रीदेवी को कहते हैं कि ''जन्माष्टमी का व्रत सौ जन्मों के पापों से मुक्ति दिलानेवाला है ।'' उपवास से भूख-प्यास आदि कष्ट सहने की आदत पड़ जाती है, जिससे आदमी का संकल्पबल बढ़ जाता है । इन्द्रियों के संयम से संकल्प की सिद्धि होती है, आत्मविश्वास बढ़ता है जिससे आदमी लौकिक फायदे अच्छी तरह से प्राप्त कर सकता है ।

इसका मतलब यह नहीं कि व्रत की महिमा सुनकर मधुमेहवाले या कमजोर लोग भी पूरा व्रत रखें । बालक, अति कमजोर तथा बूढ़े लोग अनुकूलता के अनुसार थोड़ा फल आदि खायें ।

अकाल मृत्यु व गर्भपात से करे रक्षा

'भविष्य पुराण' में लिखा है कि 'जन्माष्टमी का व्रत अकाल मृत्यु नहीं होने देता है । जो जन्माष्टमी का व्रत करते हैं, उनके घर में गर्भपात नहीं होता । बच्चा ठीक से पेट में रह सकता है और ठीक समय पर बालक का जन्म होता है ।'

पुण्य के साथ दिलाये स्वास्थ्य-लाभ

जन्माष्टमी के दिनों में मिलनेवाला पंजीरी का प्रसाद वायुनाशक होता है । उसमें अजवायन, जीरा व गुड़ पड़ता है । इस मौसम में वायु की प्रधानता है तो पंजीरी खाने-खिलाने का उत्सव आ गया । यह मौसम मंदाग्नि का भी है । उपवास रखने से मंदाग्नि दूर होगी और शरीर में जो अनावश्यक द्रव्य पड़े हैं, उपवास करने से वे खिंचकर जठर में आ के स्वाहा हो जायेंगे, शारीरिक स्वास्थ्य मिलेगा । तो पंजीरी खाने से वायु का प्रभाव दूर होगा और व्रत रखने से चित्त में भगवदीय आनंद, भगवदीय प्रसन्नता उभरेगी तथा भगवान का ज्ञान देनेवाले गुरु मिलेंगे तो ज्ञान में स्थिति भी होगी । अपनी संस्कृति के एक-एक त्यौहार और एक-एक खानपान में ऐसी सुंदर व्यवस्था है कि आपका शरीर स्वस्थ रहे, मन प्रसन्न रहे और बुद्धि में बुद्धिदाता का ज्ञान छलकता जाय । जन्माष्टमी के दिन किया हुआ जप अनंत गुना फल देता है । उसमें भी जन्माष्टमी की पूरी रात जागरण करके जप-ध्यान का विशेष महत्त्व है ।

(पृष्ठ १३ 'प्रेम में मांग...' का शेष) रहे थे । भगवान बोले : ''तुम मेरे को क्या पकड़ते हो, मैं तुमको पकड़ता हूँ ।'' कृष्ण अपने मायाबल से छूट गये ।

सूरदास ने चुनौती दे दी कि ''मुझे दुर्बल जानकर अपना हाथ छुड़ाकर जाते हो लेकिन सबल तो आपको तब मानूँगा जब मेरे हृदय में से निकलकर जा सको ।'' माँग नहीं है तो भगवान को चुनौती दे दी ।

जो किसीके भरोसे सुखी होना चाहता है वह इच्छाओं का गुलाम है और जो केवल ईश्वर के भरोसे रहना चाहता है, रामरस में तृप्त रहना चाहता है वह आशाओं का स्वामी है । आशाओं का जो स्वामी हो जाता है, उसका जीवन धन्य हो जाता है ।

जीवन पाथेय

कर्तव्यपरायणता

अंग्रेजी शासन में न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानडे का नाम सुविख्यात था। अंग्रेजों की नौकरी करते हुए भी उन्होंने अपने संस्कृति के सुअभिमान तथा राष्ट्रनिष्ठा में कमी नहीं आने दी । वे अंग्रेजों की पश्चिमी सभ्यता तथा गुलामी की मानसिकता से अप्रभावित थे क्योंकि उन्हें अपने देश की सनातन संस्कृति की गौरवमयी महानता का ज्ञान था।

न्यायमूर्ति महादेवजी का स्थानांतरण कोल्हापुर (महाराष्ट्र) के न्यायालय में हुआ । कोल्हापुर में ही उनका परिवार भी रहता था। न्याय से संबंधित कार्य में वे किसीका भी हस्तक्षेप सहन नहीं करते थे । उनके पिताजी अपने पुत्र की धर्मनिष्ठा, देशभक्ति, सेवा में तत्परता तथा न्यायपरायणता देखकर अति प्रसन्न रहते थे।

एक बार एक रिश्तेदार महादेवजी के घर आये और उनके पिताजी को अपने एक मुकदमे के बारे में बताया। पिताजी ने महादेवजी से कहा : ''बेटा ! इनका काम हो जाना अत्यावश्यक है।''

महादेवजी चुप रहे। रिश्तेदार ने चुप्पी को भाँपते हुए कहा : ''यदि आपको अभी समय न हो तो मैं बाद में आकर आपको सारे कागजात दिखा दूँगा।''

महादेवजी ने कहा : ''हाँ, आप बाद में दिखा दें, अभी मैं दूसरे कार्यों में व्यस्त हूँ।''

रिश्तेदार चले गये, तब महादेवजी ने अपने पिताजी के चरण छूकर कहा : ''कोल्हापुर में हमारे बहुत-से रिश्तेदार तथा मित्र रहते हैं । मैंने अुवा आपने थोड़ी-सी भी छूट दी तो हर कोई आयेगा और अपने मुकदमे के लिए किसी-न-किसी प्रकार का दबाव डालेगा । अगर हम एक बार दलदल में गिरे तो फिर उलझते चले जायेंगे । **'छिद्रेश्वनर्था बहुली भवन्ति'** यह उक्ति तो प्रसिद्ध है । यदि आप ऐसा

न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानडे

प्रस्ताव देंगे तो मुझे स्थानांतरण के लिए तत्काल प्रयत्न करना पड़ेगा। किसी भी मुकदमे से संबंधित व्यक्ति से घर पर न मिलने का तथा उससे व्यक्तिगत बातचीत न करने का मेरा नियम है और न्याय में सत्य का पक्ष लेना ही मेरा परम कर्तव्य है। मैं अपने कर्तव्यपथ पर ठीक से चलूँ, उसे सँभालने का उत्तरदायित्व जितना मुझ पर है, उतना ही मेरे पिता के नाते आप पर भी है।''

पिताजी ने यह तो सुन रखा था कि यह न्याय-कार्य में किसीका भी हस्तक्षेप सहन नहीं करता पर पिता की बात भी नहीं मानेगा ऐसी कल्पना उन्होंने नहीं की थी।

पुनः विनम्रतापूर्वक बोले : ''पिताजी ! बुद्धि, धैर्य और यादशक्ति - इन तीनों की अवहेलना करके जो व्यक्ति शारीरिक अथवा मानसिक असत्य कार्यों को करता है, भूलें करता है उसे अंतःकरण की अवहेलना कहा जाता है, जिससे अंतरात्मा लानत बरसाता है तथा यही दोष शारीरिक और मानसिक संतुलन को बिगाड़ता है जिसके कारण मानसिक एवं शारीरिक रोग होते हैं। इससे घर में अशांति आयेगी। क्या आप ऐसा चाहते हैं पिताजी !''

बेटे की गौरवमयी तथा सुस्पष्ट वाणी सुनकर पिताजी का हृदय गद्गद हो उठा । उन्होंने जीवन में दुबारा ऐसा कोई अवसर नहीं आने दिया।

संस्कृति दर्शन

राष्ट्रभाषा : देश का स्वाभिमान, संस्कृति की पहचान

(राष्ट्रभाषा दिवस : १४ सितम्बर)

भारतीय सभ्यता में विभिन्नताओं के बावजूद हमारा आचार-विचार, व्यवहार सभी एक मूल धारा से जुड़ा है और उसीका नाम है संस्कृति, जिसकी संहिता है संस्कृत भाषा में। देश की तमाम भाषाएँ संस्कृत भाषा की पुत्रियाँ मानी जाती हैं, जिनमें पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोये रखने का महान कार्य करनेवाली ज्येष्ठ पुत्री है हमारी राष्ट्रभाषा 'हिन्दी'। देश की अन्य भाषाएँ उसकी सहयोगी बहनें हैं, जो एकता में अनेकता व अनेकता में एकता का आदर्श प्रस्तुत करती हैं। प्राचीनकाल में संस्कृत भाषा के विशाल साहित्य के माध्यम से जीवन-निर्माण की नींव रखी गयी थी। उसीसे प्रेरित और उसीका युग-अनुरूप सुविकसित मधुर फल है राष्ट्रभाषा हिन्दी का साहित्य। आज भी इस विशाल साहित्य के माध्यम से नीतिमत्ता के निर्देश, ईश्वर के आदेश, ऋषियों के उपदेश और महापुरुषों के संदेश हमारे जीवन की बगिया को सुविकसित करते हुए महकता उपवन बना रहे हैं।

अंग्रेजी शासन से पूर्व हमारे देश में सभी कार्य हिन्दी में किये जाते थे। मैकाले की शिक्षा-पद्धति विद्यालयों में आयी और विद्यार्थियों को अंग्रेजी में पढ़ाया जाने लगा, उसीमें भावों को अभिव्यक्त करने के लिए मजबूर किया जाने लगा। हिन्दी को केवल एक भाषा विषय की जंजीरों में बाँध दिया गया, जिसके दुष्परिणाम सामने हैं।

अंग्रेजी भाषा के दुष्परिणाम

गांधीजी कहते थे : ''विदेशी भाषा के माध्यम ने बच्चों के दिमाग को शिथिल कर दिया है। उनके स्नायुओं पर अनावश्यक जोर डाला है, उन्हें रट्टू और नकलची बना दिया है तथा मौलिक कार्यों और विचारों के लिए सर्वथा अयोग्य बना दिया है। इसकी वजह से वे अपनी शिक्षा का सार अपने परिवार के लोगों तथा आम जनता तक पहुँचाने में असमर्थ हो गये हैं। यह वर्तमान शिक्षा-प्रणाली का सबसे बड़ा करुण पहलू है। विदेशी माध्यम ने हमारी देशी भाषाओं की प्रगति और विकास को रोक दिया है। कोई भी देश नकलचियों की जाति पैदा करके राष्ट्र नहीं बन सकता।''

लौहपुरुष सरदार पटेल कहते थे : ''विदेशी भाषा के माध्यम द्वारा शिक्षा देने के तरीके से हमारे युवकों की बुद्धि के विकास में बड़ी कठिनाई पैदा होती है। उनका बहुत-सा समय उस भाषा को सीखने में ही चला जाता है और इतने समय के बावजूद यह कहना कठिन होता है कि उन्हें शब्दों का ठीक-ठाक अर्थ कितना आ गया।''

भ्रांतियों से सत्यता की ओर...

मैकाले की शिक्षा-पद्धति के गुलाम आज के व्यक्तियों द्वारा हमारी भोली-भाली युवा पीढ़ी को भ्रमित करने के लिए अंग्रेजी के पक्ष में कई तर्क दिये जाते हैं, जिनका सच्चाई से कोई संबंध नहीं होता। जैसे - वे कहते हैं कि

'अंग्रेजी बहुत समृद्ध भाषा है।' परंतु किसी भी भाषा की समृद्धि इस बात से तय होती है कि उसमें कितने मूल शब्द हैं। अंग्रेजी में सिर्फ १२,००० मूल शब्द हैं। बाकी के सारे शब्द चोरी के हैं अर्थात् लैटिन, फ्रेंच, ग्रीक भाषाओं अथवा दक्षिण-पूर्व एशिया के कुछ देशों की भाषाओं के हैं। इस भाषा की गरीबी तो इस उदाहरण से स्पष्ट हो जाती है कि अंग्रेजी में चाचा, मामा, फूफा, ताऊ सबको 'अंकल' और चाची, मामी, बुआ, ताई सबको 'आँटी' कहते हैं। जबकि हिन्दी में ७०,००० मूल शब्द हैं। इस प्रकार भाषा के क्षेत्र में अंग्रेजी कंगाल है।

मैकाले की शिक्षा-पद्धति के गुलाम कहते हैं कि 'अंग्रेजी नहीं होगी तो विज्ञान व तकनीक की पढ़ाई नहीं हो सकती' परंतु जापान एवं फ्रांस में विज्ञान व तकनीक की पढ़ाई बिना अंग्रेजी के बड़ी उच्चतर रीति से पढ़ायी जाती है। पूरे जापान में इंजीनियरिंग तथा चिकित्सा के जितने भी महाविद्यालय व विश्वविद्यालय हैं, सबमें जापानी भाषा में पढ़ाई होती है। जापान के लोग विदेश भी जाते हैं तो आपस में जापानी में ही बात करते हैं। जापान ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपनी भाषा में ही अध्ययन करके उन्नति की है, जिसका लोहा पूरा विश्व मानता है। इसी तरह फ्रांस में बचपन से लेकर उच्च शिक्षा तक पूरी शिक्षा फ्रेंच भाषा में दी जाती है।

इसके विपरीत हमारे देश में अंग्रेजी भाषा के प्रशिक्षण को राष्ट्रीय एवं राज्यीय कोषों से आर्थिक सहायता द्वारा प्रोत्साहन दिया जा रहा है। संसद, न्यायपालिका आदि महत्त्वपूर्ण प्रणालियों में भी अंग्रेजी को प्रधानता मिल रही है। इससे केवल उच्च वर्ग ही इनका लाभ ले पा रहा है। 'अंग्रेजी युवा पीढ़ी की माँग है' - ऐसा बहाना बनाकर विज्ञापनों के माध्यम से भाषा की तोड़-मरोड़ करके अपनी ही राष्ट्रभाषा का घोर तिरस्कार किया जा रहा है। उसका सुंदर, विशुद्ध स्वरूप विकृत कर उसमें अंग्रेजी के शब्दों की मिलावट करके टीवी धारावाहिकों, चलचित्रों आदि के माध्यम से सबको सम्मोहित किया जा रहा है।

अंग्रेजी का दुष्परिणाम इतना बढ़ गया है कि बच्चों के लिए अपनी माँ को 'माताश्री' कहना तो दूर 'माँ' कहना भी दूभर होता जा रहा है। जिस भाषा में वात्सल्यमयी माँ को 'मम्मी' (मसाला लगाकर रखी हुई लाश) और जीवित पिता को 'डैडी' (डेड यानी मुर्दा) कहना सिखाया जाता है, उसी भाषा को बढ़ावा देने के लिए हमारे संस्कारप्रधान देश की जनता के खून-पसीने की कमाई को खर्च किया जाना कहाँ तक उचित है ?

बुराई का तुरंत इलाज होना चाहिए

गांधीजी कहते थे : ''अंग्रेजी सीखने के लिए हमारा जो विचारहीन मोह है, उससे खुद मुक्त होकर और समाज को मुक्त करके हम भारतीय जनता की एक बड़ी-से-बड़ी सेवा कर सकते हैं। **अगर मेरे हाथों में तानाशाही सत्ता हो तो मैं आज से ही विदेशी माध्यम के जरिये दी जानेवाली शिक्षा बंद कर दूँ और सारे शिक्षकों व प्राध्यापकों से यह माध्यम तुरंत बदलवा दूँ या उन्हें बरखास्त करा दूँ।** मैं पाठ्यपुस्तकों की तैयारी का इंतजार नहीं करूँगा। वे तो माध्यम के परिवर्तन के पीछे-पीछे अपने-आप चली आयेंगी। यह एक ऐसी बुराई है, जिसका तुरंत इलाज होना चाहिए।''

मातृभाषा हो शिक्षा का माध्यम

बच्चा जिस परिवेश में पलता है, जिस भाषा को सुनता है, जिसमें बोलना सीखता है उससे उसका घनिष्ठ संबंध व अपनत्व हो जाता है। और यदि वही भाषा उसकी शिक्षा का माध्यम बनती है तो वह विद्यालय में आत्मीयता का अनुभव करने लगता है। उसे किसी भी विषय को समझने के लिए अधिक मेहनत नहीं करनी पड़ती। दूसरी भाषा को सीखने-समझने में लगनेवाला समय उसका बच जाता है। इस विषय में गांधीजी कहते हैं : ''राष्ट्रीयता टिकाये रखने के लिए किसी भी देश के बच्चों को नीची या ऊँची - सारी शिक्षा **(शेष पृ. ३१ पर)**

नारी ! तू नारायणी

स्त्रियों के भूषण सात सद्गुण

- पूज्य बापूजी

जिस स्त्री में ७ दिव्य गुण होते हैं, उसमें साक्षात् भगवान का ओज-तेज निवास करता है। **एक है 'कीर्ति'** अर्थात् आसपास के लोगों का आपके ऊपर विश्वास हो। अड़ोस-पड़ोस के लोग आपमें विश्वास करें, ऐसी आप सदाचारिणी हो जाओ। यह भगवान की कीर्ति का गुण है। लोगों को विश्वास हो कि 'यह महिला बदचलन नहीं है, झूठ-कपट करके ठगेगी नहीं।' आप बोलें तो आपकी बात पर लोग विश्वास करें। कीर्ति में ईश्वर का वास होता है।

दूसरा 'श्री' माने सच्चरित्रता का सौंदर्य हो। चरित्र की पवित्रता हर कार्य में सफल बनाती है। जिसका जीवन संयमी है, सच्चरित्रता से परिपूर्ण है उसकी गाथा इतिहास के पन्नों पर गायी जाती है। व्यक्तित्व का निर्माण चरित्र से ही होता है। बाह्यरूप से व्यक्ति भले ही सुंदर हो, निपुण गायक हो, बड़े-से-बड़ा कवि हो, चमक-दमक व फैशन वाले कपड़े पहनता हो परंतु यदि वह चरित्रवान नहीं है तो समाज में उसे सम्मानित स्थान नहीं मिल सकता। उसे तो हर जगह अपमान, अनादर ही मिलता है। चरित्रहीन व्यक्ति आत्मसंतोष और आत्मसुख से वंचित रहता है। अतः अपना चरित्र पवित्र होना चाहिए।

स्वयं अमानी और दूसरों को मान देनेवाली वाणी बोलो। यह **'मधुर वाणी'** रूपी **तीसरा** गुण है। कम बोलें, सच बोलें, प्रिय बोलें, सारगर्भित बोलें, हितकर बोलें।

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपहुँ शीतल होय॥

चौथा गुण है **'स्मृति'**। जो काम करना है वह भूल गये या जरा-जरा बात में 'मैं भूल गयी...' नहीं। आपका स्मृति का सद्गुण विकसित हो इसलिए मैं ॐऽऽऽ का प्रयोग करवाता हूँ। इससे स्मृति में भगवान का ओज व समता रहती है।

पाँचवाँ गुण है **'मेधा'** अर्थात् अचानक प्रतिकूल परिस्थिति आ जाय तो सारभूत निर्णय लेने की ताकत।

छठा गुण है **'धैर्य'** अर्थात् इन्द्रियों को धारण करने की, नियंत्रित करने की शक्ति। ऐसा नहीं कि कहीं कुछ देखा, खरीद लिया। बढ़िया दिखा, खा लिया। नाक बोलती है, 'जरा परफ्यूम सूँघ लो।' जीभ बोलती है, 'जरा चटपटी चाट खा लो।' पैर बोलते हैं, 'जरा फिल्म में ले जाओ।' नहीं, संयम से। किधर पैरों को जाने देना, किधर आँख को जाने देना, इस बारे में धैर्य से, नियम से रहें। जरा-जरा बात में उत्तेजित-आकर्षित नहीं हो जाना।

सातवाँ गुण है **'क्षमा'**। क्षमा स्त्री की सुंदरता, हृदय की सुंदरता है। अपराधी को सजा देने की ताकत है फिर भी उसका मंगल सोचते हुए क्षमा करने का यह ईश्वरीय गुण आपके जीवन में हो। कभी सासु से अपराध हुआ, कभी बहू, पति या पड़ोसी से हुआ तो कभी किसीसे अपराध हुआ, उसके अपराध को याद कर-करके अपना दिल **(शेष पृ. ३१ पर)**

मधुर संस्मरण

पूज्य बापूजी व मित्रसंत

पूज्य बापूजी व श्री लालजी महाराज के मिलन-प्रसंग स्वयं पूज्यश्री के शब्दों में

(अंक २४६ से आगे)

लालजी महाराज का परिचय

मेरे अन्य एक मित्रसंत थे लालजी महाराज । वे अहमदाबाद से ५५-६० कि.मी. दूर मेहसाणा के पास वरसोड़ा गाँव में रहते थे । किसान श्री अमथाभाई पटेल व माता मोंघी बहन के यहाँ श्री लालजी महाराज का जन्म वि.सं. १९७१ (गुजरात-महाराष्ट्र में १९७०) की चैत्री पूर्णिमा के दिन हुआ था । माता-पिता रामनाम का खूब जप करते थे ।

एक दिन शाम के समय उनकी माँ भगवन्नाम-जप कर रही थीं । माँ ने बेटे से कहा : ''जरा गाय-भैंस को घास-चारा डाल देना ।''

बारिश के दिन थे । लालजी महाराज घास-चारा उठाकर ला रहे थे तो उसके अंदर बैठे भयंकर साँप पर दबाव पड़ा और उसने उनको काट लिया । वे चिल्लाकर गिर पड़े । साँप के जहर से पूरा शरीर हरे वर्ण का हो गया । कुछ ही देर में वे भगवान की गोद में सो गये ।

गाँव के लोग दौड़े आये और बोले : ''माई ! तेरा इकलौता बेटा चला गया ।''

माँ : ''अरे ! क्या चला गया ? भगवान की जो मर्जी होती है वही होता है ।''

माँ ने बेटे को लेटा दिया । सामने घी का दिया जलाया और माला करते हुए भगवन्नाम-जप शुरू कर दिया । वह रातभर जप करती रही । सुबह पानी लाकर बेटे के शरीर पर छिड़क के बोली : ''लालू ! उठ । सुबह हो गयी है ।''

बेटे का सूक्ष्म शरीर वापस आया और बेटा उठकर बैठ गया । तत्पश्चात् वे ८० वर्ष से भी अधिक जिये ।

उत्तम जापक द्वारा श्रद्धा से किया गया मंत्रजप मृतक में भी प्राण फूँक सकता है । माता की दृढ़ भगवद्भावना के बल पर श्रीरामनाम-स्मरण की साधना प्रकट फलदात्री बनी । इस प्रकार रामनाम-स्मरण का अखूट धन लालजी महाराज को धरोहर में मिला था ।

एक ही सब, सब ही एक

लालजी महाराज जिस दिन विद्यालय में गये उसी दिन वापस आ गये । स्लेट में एक का अंक लिखने के बाद दूसरा कोई अंक लिखने की उन्हें इच्छा ही नहीं हुई।

मास्टर : ''दूसरा भी कुछ लिखो।''

''दूसरा क्या है ? एक राम के सिवा दूसरा कुछ नहीं है।''

''और कुछ लिखो।''

''और कुछ नहीं है।''

विद्यालय में टिक न सके तो उन्हें घर की भैंस व बैलों को चराने ले जाने का काम मिला। दोपहर को खेत में सो जाते तो सपने में उन्हें अनेक विद्वान ब्राह्मण-समुदाय दर्शन देकर वेदमंत्रों के पाठ करवाते थे।

बचपन का भोलापन

लालजी महाराज ने मुझे कहा था कि ''मैं बचपन में कितना भोला था उस संदर्भ में आपको एक प्रसंग बताता हूँ। एक बार हमारे गाँव में 'महाभारत' का एक नाटक दिखाया गया। उसे देखने गया तो अभिमन्यु को जब सारे राजाओं ने घेर लिया और तलवार से मारने लगे, तब मैं खड़ा होकर चिल्लाने लगा कि 'मत मारो बेचारे को' परंतु किसीने नहीं सुना। फिर घर आकर मैं बहुत रोया। माँ ने मुझे बहुत समझाया कि वह तो नाटक था, कोई नहीं मरा। परंतु जब नाटक कम्पनी के लोगों से मिलकर आया और तसल्ली हुई तभी माना।''

अलौकिक रूप से वेदना-शांति

लालजी महाराज के पिता के देवलोक जाने के बाद पिता की सम्पत्ति और चौधरी-पटेल जाति में गाँव की परम्परागत मुखियागिरी का पद लालजी महाराज को मिला । उनके किसी रिश्तेदार ने लालजी महाराज पर मूठ मारने की मैली विद्या का प्रयोग करवाया ताकि उसे सम्पत्ति भी मिल जाय और मुखिया भी बनने को मिले।

इससे लालजी महाराज के शरीर में असह्य पीड़ा शुरू हो गयी । शरीर में मानो आग, आग, आग... भयानक जलन होने लगी । जिसके लिए मूठ मारी जाती है वह कहीं का नहीं रहता है । कोई हकीम, डॉक्टर अथवा झाड़-फूँक करनेवाला उसे ठीक नहीं कर सकता। लेकिन लालजी महाराज हनुमानजी के प्रेमी भक्त थे। इसलिए वे हनुमानजी का जप करने लगे।

थोड़ी देर बाद उन्हें एक नन्हा-सा, अत्यंत आकर्षक बालक सामने से आता हुआ दिखा । वास्तव में हनुमानजी ही एक नन्हे-मुन्ने बालक का रूप लेकर उनके पास आये थे । उन्होंने लालजी महाराज से कहा : ''मेरे साथ आओ।''

उन दोनों के स्थूल शरीर तो वहीं रहे, सूक्ष्म शरीर से बालक उड़ता गया और लालजी महाराज को भी साथ लेता गया। वे उड़ते-उड़ते इस पृथ्वीलोक से परे किसी दिव्य वन में जा पहुँचे। नीचे उतरकर बेर के पेड़ के नीचे कुटिया में विराजमान ऋषि से उस नन्हे-से बालक के रूप में आये हनुमानजी ने प्रार्थना की : ''यह मेरा भक्त है । इसको ठीक कर दीजिये।''

उन ऋषि ने किसी वनस्पति की पतली डाली से उतारा करके फेंका तो वह डाली जल गयी। फिर उन ऋषि ने लालजी महाराज से कहा : ''वत्स ! तुम्हारे इष्ट हनुमानजी तुम्हारे रक्षक हैं इसीलिए तुम्हारी मृत्यु टल सकी है। तुम्हारा मंगल होगा।''

यह है भगवद्भजन की महिमा ! बाद में उन्होंने श्रीरामजी और माँ गायत्री के भी दर्शन किये थे । लालजी महाराज ने भगवत्प्राप्ति-अर्थ अज्ञातवास व मौन-व्रत का पालन करते हुए नर्मदा-किनारे १२-१२ वर्ष के दो अनुष्ठान भी किये थे । तत्पश्चात् उनके सद्गुरु श्री स्वामी माधवतीर्थजी की प्रेरणा से १८ करोड़ गुरुमंत्र के जप का अनुष्ठान भी किया।

पर्व मांगल्य

आत्मनिर्माण का पर्व

- पूज्य बापूजी

पूनम एक, उत्सव अनेक

जैसे दिवाली व्यापारियों के लिए विशेष है, ऐसे ब्राह्मणों के लिए श्रावणी पूर्णिमा विशेष पर्व है । इस दिवस को ब्राह्मण लोग नूतन वर्ष की नाईं मनाते हैं । ब्राह्मण अपना जनेऊ बदलते हैं, सप्त ऋषियों को याद करते हैं, उनकी समता और परम सुख देनेवाली परमात्म-ज्ञान की यात्रा में दृढ़ होने का संकल्प करते हैं । समुद्री नाविक इस दिन समुद्रदेव को अपनी सुरक्षा के लिए प्रार्थना करते हुए नारियल अर्पण करते हैं । अतः इसे 'नारियली पूनम' भी कहते हैं ।

इस दिन भाई-बहन और मित्र परस्पर एक-दूसरे को रक्षासूत्र बाँधकर शुभ संकल्प करते हैं । भगवान हयग्रीव का अवतार भी इसी पूर्णिमा को हुआ था और 'संस्कृत भाषा दिवस' भी इसी पूनम पर मनाया जाता है । संस्कार जिससे मिलते हैं वह है वैदिक भाषा, संस्कृत भाषा । इसको 'देवभाषा' भी कहा गया है । इसकी लिपि 'देवनागरी' है । यह विश्व की सबसे समृद्ध भाषा कही गयी है । धार्मिक जीवन, सुसंस्कृत जीवन, भोग की विकृति से बचकर समाधिस्थ और प्रकृतिस्थ जीवन - इन सबसे ऊपर उठाकर प्रारब्ध से भी आगे पहुँचा के जीवात्मा को परमात्मा से मिलाने की व्यवस्था करती है संस्कृत भाषा व अपनी संस्कृति ।

आत्मवैभव पाने का संकल्प-दिवस

श्रावणी पूर्णिमा पर्व का उद्देश्य है **'आत्मनिर्माण'** । शरीर का निर्माण तो हो गया, शरीर तो छूट जायेगा लेकिन शरीर के बाद भी आपकी आत्मा की दुर्गति न हो, आत्मनिर्माण हो । प्रकृति व तुम्हारी वासना तुम्हें घोड़ा-गधा, कुत्ता-बिल्ला बना दे अथवा भूत-प्रेत या राक्षस की योनि में धकेल दे, नहीं । जैसे प्रकृति ने ठंड बनायी तो तुमने स्वेटर और कोट बनाये, प्रकृति ने आँधी-तूफान बनाया तो तुमने घर-मकान बनाये, प्रकृति ने गर्मी बनायी तो तुमने पंखे और ए.सी. खोज लिये । इसी प्रकार **प्राकृतिक जन्म-मरण की परम्परा से रक्षित होने का पुरुषार्थ करके अपने आत्मवैभव को पाने का संकल्प करने का दिवस है श्रावणी पूर्णिमा ।**

यह आत्मोन्नति का पर्व है । नारियली पूनम, रक्षाबंधन, सजग होने का संदेश देनेवाली इस श्रावणी पूनम को पक्का निर्णय करो कि 'इसी जन्म में भगवान का रस पाना है, भगवान का ज्ञान व प्रेम पाना है ।' अपना ऊँचा लक्ष्य बनाओ कि 'सुख में हम अहंकारी नहीं होंगे । सुख-दुःख में हम भोगी नहीं बनेंगे ।' जो दुःख का भोक्ता है उसकी दुःख से जान कभी नहीं छूटेगी और जो सुख का भोक्ता है वह भय और खोखलेपन की खाई से कभी नहीं बच सकता है । अतः इस दिन आत्मनिर्माण का संकल्प करो कि 'प्रतिदिन चंचलता को पार करनेवाला भगवन्नाम का गुंजन करके शांत होने का अभ्यास करेंगे । श्वास अंदर गया तो भगवान का नाम, बाहर आया तो गिनती - ऐसी श्वासोच्छ्वास की साधना करेंगे ।'

शुभ संकल्पों के आदान-प्रदान का दिन : रक्षाबंधन

जैसे भगवान भाव के भूखे हैं, ऐसे ही बहन भी

भाई के लिए उत्तम भाव करती है तो भाई के हृदय में भी बहन के लिए उत्तम भाव पैदा होते हैं। तो भाव को अभिव्यक्त करने के लिए साड़ी है तो साड़ी, बर्तन है तो बर्तन या और कोई चीज भाई बहन को देता है। प्रेम में पदार्थ तुच्छ हो जाते हैं, वस्तुएँ छोटी हो जाती हैं। और भारतीय संस्कृति का यह दृष्टिकोण रहा है कि प्रेम लेना नहीं जानता, प्रेम प्रेमास्पद को देकर उसके सुख में अपने सुख का एहसास करता है। बहन का भाई के प्रति शुद्ध, पवित्र प्रेम है तो भाई को और कुछ नहीं तो शुभ संकल्पयुक्त सूती धागा बाँधती है। प्रेम इतना संवेदनशील है, इतना अद्भुत, इतना सच्चा है कि भाई के हृदय में भी आंदोलन पैदा कर देता है और वह भी कुछ-न-कुछ दिये बिना रहता नहीं है।

आज के दिन भाई-बहन और मित्र परस्पर जो रक्षासूत्र बाँधते हैं, उसमें बड़ा संकल्प होता है कि 'वर्षभर हम निरोग रहें - तन से, मन से, मति से और गति से...' धागा तो छोटा-सा होता है लेकिन इसका संकल्प बड़ा काम करता है।

रक्षाबंधन दिवस मनाते समय बहन भाई के ललाट पर तिलक करे और भावना करे कि 'मेरा भैया त्रिलोचन हो। दो आँखों से इस दुनिया को देखकर दुनिया का पिट्ठू बन के मर जाय, ऐसा नहीं। सुख-दुःख में समता कैसे पायें और ज्योतियों की ज्योति आत्मज्योति को कैसे जगायें ? - ऐसी तीसरी आँख मेरे भैया की खुली होनी चाहिए।'

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वां अभिबध्नामि[1] रक्षे मा चल मा चल॥

'जिस पतले रक्षासूत्र ने महाशक्तिशाली असुरराज बलि को बाँध दिया, उसीसे मैं आपको बाँधती हूँ। यह धागा टूटे नहीं और आप सुरक्षित रहें।'- यही संकल्प करते हुए बहन भाई को राखी बाँधती है। जैसे शची (इन्द्र की पत्नी) ने देखा कि १२ साल हो गये, अभी तक युद्ध में निर्णायक अवस्था नहीं आयी। अतः इन्द्राणी ने बृहस्पति के सुझाव से इन्द्र को रक्षासूत्र बाँधा कि 'युद्ध में इन्द्र की रक्षा हो' और इन्द्र विजयी हुए। कुंता ने अभिमन्यु को संकल्पसहित राखी बाँधी। जब तक वह रक्षासूत्र था, अभिमन्यु जूझता ही रहा। पहले धागा टूटा, बाद में अभिमन्यु मरा।

अपनी बहन मिले तो ठीक है, नहीं तो किसी भारतीय नारी को अपनी बहन बनाकर उसका शुभ संकल्प ले सकते हैं। बाल गंगाधर तिलक विदेश में थे। खोजते-खोजते एक हिन्दू महिला के घर पहुँच गये और बोले : ''बहन ! कल मैं तुम्हारे यहाँ भोजन करने आऊँगा और तुम रक्षाबंधन का एक धागा मेरे हाथ में बाँध देना। तुम्हारे शुभ संकल्प से मैं वर्षभर चरित्र और सद्विचारों से सम्पन्न रहूँगा।''

गर्भपात से बचने का उपाय

- पूज्य बापूजी

'गीता' में भगवान कहते हैं :

प्रभास्मि शशिसूर्ययोः।

'हे अर्जुन ! मैं चंद्रमा और सूर्य में प्रकाश हूँ।'

चंद्रमा की किरणें गर्भ को पुष्ट करती हैं। किसी महिला को यदि डॉक्टर बोलें कि 'गर्भ विकसित नहीं हुआ है, गर्भपात करा दो।' तो डॉक्टरों की गर्भपात कराने की बात मत मानो। चंद्रमा की किरणों में इस प्रकार बैठो जिससे नाभि पर चंद्रमा की किरणें पड़ें और भावना करो कि 'ॐ ॐ पुष्टो भव। बलवानो भव। बुद्धिमानो भव। ॐ ॐ ॐ... श्रीकृष्ण गोविंद हरे मुरारे... भगवान मृतक गर्भ की भी रक्षा कर देते हैं तो मेरा तो जिंदा गर्भ है, उसको कृष्ण अपने रंग से रँग दें...।' अमृतमय हो जायेंगी चंद्रमा की किरणें !

बापू का सत्संग माने भगवान की कथा के साथ तुम्हारी तबीयत की कथा और तुम्हारे घर में आनेवाले बबलुओं के मंगल की भी कथा ! हरि ॐ... हरि ॐ... नारायण... नारायण...

भारत को गुलाम बनाना है तो...

(मैकाले द्वारा २ फरवरी १८३५ को ब्रिटिश पार्लियामेंट में भारतवर्ष को गुलाम बनाने के लिए दिया गया घृणास्पद कुटिल सुझाव)

''मैंने भारतवर्ष के कोने-कोने में भ्रमण किया परंतु मुझे एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिला जो भिखारी हो, चोर हो। ऐसी अपार सम्पदा, इतने उच्च नैतिक आदर्श व इतने प्रतिभाशाली व्यक्तियोंवाले देश को हम कभी भी जीत नहीं पायेंगे। यदि भारत को गुलाम बनाना है तो इस देश के मेरुदंड अर्थात् भारतीय आध्यात्मिक व सांस्कृतिक परम्पराओं को तोड़ना होगा। इसलिए मेरा सुझाव है कि हमें इसकी शिक्षा-पद्धति और संस्कृति को बरबाद करना होगा क्योंकि जब प्रत्येक भारतीय के मन में यह बात अच्छी तरह घर कर जायेगी कि जो भी 'विलायती' है, वह उनके 'देशी' से श्रेष्ठ है, महान है, तब ये हीन भावना से ग्रस्त होकर अपनी गरिमा, अपने संस्कार, स्वदेश-प्रेम व स्वाभिमान को खो देंगे। तब ये वैसे बन जायेंगे, जैसा हम चाहते हैं - पूरी तरह गुलाम देश।''

आप कहते हैं...

योगाचार्य रामदेवजी महाराज : ''सामाजिक सेवाकार्यों के नाम पर किये जा रहे धर्मांतरण के कार्यों पर पाबंदी लगायी जानी चाहिए।''

माँ अमृतानंदमयी :

''धर्म एक ऐसी चीज है जिसे इन्सान को अपने लिए चुनना होता है। यह दूसरों पर थोपा या आरोपित नहीं किया जा सकता। जबरदस्ती किसीको एक धर्म से दूसरे धर्म में षड्यंत्र से परिवर्तित करना गलत है।''

श्री मोरारी बापू : ''बाइबिल स्वयं धर्मांतरण के पक्ष में नहीं है और जो इसमें लगे हैं उन्हें सजा दी जानी चाहिए।''

साध्वी ऋतम्भराजी : ''देश में सेवा के नाम पर सौदा हो रहा है और धर्मांतरण किया जा रहा है। इसलिए निश्चय करो हिन्दुओ ! एक सक्षम हिन्दू एक अक्षम हिन्दू की चिंता करेगा तो मिशनरियों के बोरी-बिस्तर गोल हो जायेंगे क्योंकि उनकी आधारभूमि गरीबी है, दरिद्रता है जिसका वे छल-कपट से लाभ उठाते हैं।''

जगद्गुरु आचार्य श्री रामदयालदासजी महाराज, अंतर्राष्ट्रीय रामसनेही सम्प्रदाय : ''भारत के मासूम, भोले-भाले, सरल लोगों को, मातृशक्तियों को अपने शब्दों के चक्रव्यूह में फँसाकर चारों तरफ धर्मांतरण का विषपान कराया जा रहा है। आतंकवादी तो एक बार हमला करके अपना काम कर लेते हैं पर यह रोज हमला हो रहा है, इसे कौन सँभालेगा ?''

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन् : ''जो भी हिन्दू संस्कृति और हिन्दू जीवन अपनाते हैं, चाहे वे आस्तिक हों या नास्तिक, संशयवादी हों या जड़वादी सब-के-सब हिन्दू हैं। हिन्दू धर्म में जबरदस्ती या डराकर काम (शेष पृष्ठ २९ पर)

भारी पड़ा साधकों की धार्मिक भावनाओं के साथ खिलवाड़ !

संतों का कुप्रचार करनेवालों को न्यायालय का करारा तमाचा

औरंगाबाद (महाराष्ट्र) की न्यायिक अदालत ने स्थानीय पुलिस को 'टाइम्स ऑफ इंडिया ग्रुप' द्वारा संचालित 'टाइम्स इंटरनेट लिमिटेड', उसके मुख्य सम्पादक, अध्यक्ष, मार्केटिंग डायरेक्टर तथा अन्य अधिकारियों के विरुद्ध पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के बारे में आपत्तिजनक झूठी तस्वीर व लेखन प्रकाशित करके श्रद्धालुओं एवं साधकों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुँचाने के जुर्म में आईपीसी की धारा २९५ए, २९८, १५३ए व ५०० तथा आईटी एक्ट २००० के अंतर्गत फौजदारी मुकदमा दर्ज करने का निर्देश दिया है।

इसी तरह औरंगाबाद के ग्रामीण न्यायालय ने इसी जुर्म के लिए मुंबई से प्रकाशित पत्रिका 'कलमनामा' के विरुद्ध आईपीसी की धारा २९५ए, २९८, ५००, ५०५ व आर.डब्ल्यू.३४ तथा आईटी एक्ट २००० के अंतर्गत मुकदमा दर्ज करने के आदेश पुलिस को दिये हैं।

जालंधर (पंजाब) के साधकों ने भी 'फेसबुक' पर पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के बारे में आपत्तिजनक झूठी तस्वीर दिखाने एवं आपत्तिजनक टिप्पणी करने वाले के खिलाफ आईपीसी की धारा २९५ए तथा आईटी एक्ट २००० के तहत स्थानीय पुलिस में एफआईआर दर्ज करायी है।

संतों को बदनाम करने के ऐसे घटिया रवैयों की साधकों ने कड़ी निंदा की है व अपराधियों को सख्त सजा देने की माँग की है। इस तरह धर्मप्रेमी जनता की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करनेवालों के लिए साधकों के दिल से लानत बरस रही है।

जिस तरह औरंगाबाद व जालंधर के साधकों ने अपने सद्गुरु की प्रतिष्ठा को कलंकित करनेवालों के प्रति कानूनी कार्यवाही करके अपनी गुरुनिष्ठा का परिचय दिया है, वैसे अन्य सनातन धर्मप्रेमी भी हमारे संतों और धर्म का अपमान करनेवालों को कानूनी ढंग से कड़ी-से-कड़ी सजा दिलाने के लिए कटिबद्ध हो जायें तो विदेशी ताकतों के इशारों पर नाचनेवाले लोग ऐसा दुष्कृत्य करने की हिम्मत नहीं करेंगे।

(पृष्ठ २८ का शेष)कराने की पद्धति नहीं है बल्कि वह समझा के, सुझाव रखकर काम कराने पर विश्वास करता है। हिन्दू धर्म ने अपने से भिन्न मतवालों पर अत्याचार करने को प्रोत्साहन नहीं दिया। अन्य धर्मों की अपेक्षा इसका इतिहास पवित्र है।''

डॉ. डेविड फ्राली : ''स्वतंत्रता के बाद एक ओर हिन्दू-विरोधी प्रचार तथा दूसरी ओर साम्यवाद, इस्लाम तथा ईसाई धर्म के प्रचार द्वारा भारत को टुकड़े-टुकड़े करने की साजिश ने इस देश की समस्या को काफी बढ़ाया है। ईसाई धर्म-प्रचारकों ने भारत में अपने धर्म-प्रचार के लिए कितने हिन्दू परिवारों में मतभेद पैदा किये हैं, उनकी पारिवारिक सुख-शांति भंग की है, हिन्दू समाज को तोड़ने का काम किया है तथा जिन लोगों का धर्म-परिवर्तन किया है उनकी मूल पहचान ही नष्ट कर दी है, इसकी कोई गणना नहीं। ऐसा किसी भी हिन्दू धर्म-प्रचारक ने पश्चिम के देशों में नहीं किया।''

तत्त्व दर्शन

ध्रुव की तात्त्विक ईश्वर-स्तुति

पराशरजी अपने शिष्य मैत्रेय को महान भगवद्भक्त ध्रुव की कथा के माध्यम से ब्रह्मज्ञान का अमृतपान कराने से पहले उसे सावधान करते हुए कहते हैं : ''हे मैत्रेय ! एक इतिहास कहता हूँ, वह अमृत समान है। जब बुद्धिरूपी श्रोत्र से श्रवण करेगा और विचाररूपी पात्र से पियेगा, तब तू अमृतभाव को प्राप्त होगा पर ऐसा न हो कि एक कान से सुने और दूसरे कान से निकाल दे, इससे तेरा प्रयोजन सिद्ध न होगा।

बालक ध्रुव ने वन में जाकर सद्गुरु नारदजी द्वारा प्राप्त गुरुमंत्र का जप तथा भगवान विष्णु का ध्यान शुरू कर दिया । कई प्रकार के प्रलोभन, भय, कठिनाइयाँ आयीं पर वह विचलित न हुआ। उसकी तत्परता देख भगवान विष्णु प्रकट हो गये और प्रसन्न होकर बोले : ''हे पुत्र ! तू धन्य है जो दृश्यमान पदार्थों से दृष्टि उठा के मुझमें मन लगाया है।'' यह बात सुनकर ध्रुव ने नेत्र खोले और देखा कि 'मैं भीतर जिसका ध्यान करता हूँ वही रूप बाहर खड़ा है।' देखते ही वह रोमांचित तथा मतवाला-सा हो गया। प्रभु के चरणों में पड़ा और प्रार्थना करने लगा :

''हे प्रभु ! मैं बालक हूँ, कुछ वेद-पुराण पढ़ा नहीं हूँ, कैसे आपकी स्तुति करूँ ? पर स्तुति आपकी यही है कि मैं ध्रुव नहीं, आप ही हो। हे भगवन् ! आप ही सर्व जगत के अधिष्ठान हो, आवागमन से छुड़ानेवाले हो। आप व्यापक, सर्व के अंतर्यामी हो, योगियों के ध्यान में आप विराजमान रहते हो । हे भगवन् ! मैं मूर्ख भ्रमवश आपको बाहर खोजता था, ऐसा नहीं जानता था कि आप मन में ही छिपे हुए हो।

द्वैत-अद्वैत सर्व आप हो । आप ही सर्व जगत की उत्पत्ति, पालन और संहार करनेवाले हो परंतु निर्विकार हो । यह बहुत आनंद हुआ है कि आप योगियों को दुर्लभ हो के भी मेरे नेत्रों के सन्मुख हुए हो।''

भगवान प्रसन्न हो बोले : ''हे ध्रुव ! जो तेरी इच्छा हो वह वर माँग।''

ध्रुव : ''आदि-अंत आप ही हो। आप अंतर्यामी सब हाल जानते हो, फिर भी हे भगवन् ! माता-पिता सहित मुझे ऐसा ठौर (जगह) दीजिये जो सबसे ऊँचा हो और जहाँ जाकर फिर कल्पपर्यंत गिरूँ नहीं।''

''तथास्तु... हे ध्रुव ! तुझको देह-त्याग के बाद

वह अटल पदवी मिलेगी, जो जब तक चंद्र-सूर्य गतिमान हैं तब तक स्थिर रहेगी।''

वरदान पाने पर एक बार तो ध्रुव को कुछ अहंकार हुआ कि 'मैं सबसे ऊँचा हूँ' परंतु उसी समय तप तथा प्रभु-दर्शन के प्रताप से जिसका अंतःकरण निरहंकार और शुद्ध हुआ है, ऐसा ध्रुव प्रभु के आगे प्रश्न करने लगा : ''हे स्वामी ! मैं कौन हूँ अटल पदवी लेनेवाला ? आप कौन हो अटल पदवी देनेवाले ? और अटल पदवी का क्या स्वरूप है ? जगत का क्या स्वरूप है ? हे यथार्थवक्ता ! यथार्थ कहिये कि मैं कौन हूँ ? यह मेरा संदेह दूर कीजिये।''

('आध्यात्मिक विष्णु पुराण' से क्रमशः)

❋❋❋

(पृ.२३ 'स्त्रियो के...' का शेष) दुखाओ नहीं व उसको भी बार-बार उसके अपराध की याद दिलाकर दुःखी मत करो। अपराधी को भी उसके मंगल की भावना से क्षमा कर दो। अगर उसको दंड देकर उसका मंगल होता है तो दंड दो लेकिन क्षमा के, मंगल के भाव से ! गंगाजी तिनका बहाने में देर करें परंतु तुम क्षमा करने में देर मत करो।

अश्वत्थामा ने द्रौपदी के बेटों को मार दिया। अर्जुन उसे पकड़कर ले आये और बोले : ''अब इसका सिर काट देते हैं। इसके सिर पर पैर रखकर तू स्नान कर। अपने बेटों को मारनेवाले को दंड देकर तू अपना शोक मिटा।''

द्रौपदी : ''नहीं-नहीं, **मुच्यतां मुच्यतामेष...** छोड़ दो, इसे छोड़ दो। अभी एक माँ रोती है अपने बेटे के शोक में। यह भी तो किसीका बेटा है। फिर दो माताएँ रोयेंगी। नहीं-नहीं, क्षमा !''

इन सात सद्गुणों में भगवान का सामर्थ्य होता है। ये सद्गुण सत्संग और मंत्रजप वाले के जीवन में सहज में आ जाते हैं। इन्हें सभी अपने जीवन में ला सकते हैं।

(पृ.२१ 'राष्ट्र...' का शेष) उनकी मातृभाषा के जरिये ही मिलनी चाहिए। यह स्वयंसिद्ध बात है कि जब तक किसी देश के नौजवान ऐसी भाषा में शिक्षा पाकर उसे पचा न लें जिसे प्रजा समझ सके, तब तक वे अपने देश की जनता के साथ न तो जीता-जागता संबंध पैदा कर सकते हैं और न उसे कायम रख सकते हैं।

हमारी पहली और बड़ी-से-बड़ी समाजसेवा यह होगी कि हम अपनी प्रांतीय भाषाओं का उपयोग शुरू करें और हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में उसका स्वाभाविक स्थान दें। प्रांतीय कामकाज प्रांतीय भाषाओं में करें और राष्ट्रीय कामकाज हिन्दी में करें। जब तक हमारे विद्यालय और महाविद्यालय प्रांतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षण देना शुरू नहीं करते, तब तक हमें इस दिशा में लगातार कोशिश करनी चाहिए।''

तो आइये, हम सब भी गांधीजी की चाह में अपना सहयोग प्रदान करें। हे देशप्रेमियो ! अपनी मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा का विशुद्ध रूप से प्रयोग करें और करने के लिए दूसरों को प्रोत्साहित करें। हे आज के स्वतंत्रता-संग्रामियो ! अब देश को अंग्रेजों की मानसिक गुलामी से भी मुक्त कीजिये। क्रांतिवीरो ! पूरे देश में अपनी इन भाषाओं में ही शिक्षा और कामकाज की माँग बुलंद कीजिये। आपके व्यक्तिगत एवं संगठित सुप्रयास शीघ्र ही रंग लायेंगे और सिद्ध कर देंगे कि हमें अपने देश से प्रेम है।

❋❋❋

(पृ.२७ 'आत्मनिर्माण ...' का शेष) का परिचायक दिवस है। पड़ोस की बहन या भाई की तरफ विकारी नजर गयी लेकिन इसी दिवस का इंतजार था, 'ले बहन ! आज यह धागा मेरे को बाँध' अथवा पड़ोस के भाई को बहन की तरफ से राखी बाँधी जाय। रक्षाबंधन का दिवस चरित्र-निर्माण व चरित्र सुधारनेवाला दिवस है।

सत्संग पराग

मेरा उद्देश्य भी वही है...

जन्माष्टमी श्रीकृष्ण का यश बढ़ानेवाली है, ऐसा मैं नहीं मानता हूँ । यह तो श्रीकृष्ण के अनुभव से मानवता का मंगल करनेवाली है, ऐसा मेरा अपना मंतव्य है । दुनिया के हर मजहब, पंथ, सम्प्रदाय का पुजारी इस अटपटे और अनोखे, रसमय अवतार के अनुभव से बहुत कुछ समझ सकता है ।

श्रीकृष्ण ऐसे समर्थ हैं कि कभी चतुर्भुजी बन जाते हैं और फिर द्विभुजी बन जाते हैं । जरूरत पड़ी तो युधिष्ठिर के यज्ञ में सेवाकार्य ढूँढ़ लिया, कौन-सा ? साधु-संतों के चरण धोना, उनको भोजन कराना और जूठी पत्तलें उठाना । कोई व्यक्ति बड़े पद पर पहुँच जाता है तो उसको अपनी कार चलाने में भी शर्म आती है, अपना बड़प्पन सँभालने में इतना खो जाता है, पागल हो जाता है ! लेकिन भगवान का यह कितना बड़प्पन है कि बड़प्पन सँभालने की जरूरत ही नहीं पड़ती । छोटे-से-छोटा काम कर लेते हैं । कितना फासला है !

श्रीकृष्ण का अवतार सभीके मंगल के लिए है । आप देखोगे तो श्रीकृष्ण का जीवन समस्याओं से भरा है । पूरा जीवन विघ्न-बाधा, निंदा, संघर्ष और आकर्षण, प्रेम-माधुर्य से भरा था । प्यार-प्रेम भी बहुत था और विरोध-विघ्न भी बहुत थे । न प्यार-प्रेम में फँसे न विरोध में । वृंदावन छोड़ दिया तो छोड़ दिया, मुड़कर गये नहीं । प्रजा का शोषण हो रहा था तो अर्जुन को उत्साहित किया । धृतराष्ट्र ने संदेशा भेजा कि 'श्रीकृष्ण ! तुम चाहो तो युद्ध रुक सकता है ।'

कृष्ण ने कहा : ''तुम्हारी यह बात तो ठीक है लेकिन यदि युद्ध रुका और दुर्योधन ऐसा ही बना रहा तो समाज का क्या हाल होगा ? समाज का शोषण होता रहे और युद्ध रुके वह किस काम का ? क्रांति के बाद शांति आती है । शोषित व्यक्ति शोषित होते रहें और हम युद्ध रोकने का प्रयास करें तो यह अधर्म होगा ।''

अर्जुन तो युद्ध करने को तैयार ही नहीं था । श्रीकृष्ण चुप बैठते तो भी युद्ध रुक जाता, अर्जुन साधु बाबा बन जाते लेकिन कृष्ण बोलते हैं :

क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ।

जो समाज का शोषण करते हैं उनको तपानेवाले परंतप ! उठो ।

अर्जुन ने इधर-उधर की धार्मिक बातों को सुनाकर छटकना चाहा लेकिन श्रीकृष्ण ने उसके सारे तर्क बेबुनियाद साबित कर दिये । ज्ञान में श्रीकृष्ण ऐसे हैं कि बिल्कुल तटस्थ !

'आधिभौतिक क्या होता है ? आधिदैविक क्या होता है ? अध्यात्म क्या होता है ?' अर्जुन को ऐसे प्रश्न मिले कि जिज्ञासा जगी और श्रीकृष्ण ने उसकी जिज्ञासा की पूर्ति करके उसे ऐसी जगह पहुँचाया

जहाँ स्वयं पहुँचे थे ! ऐसा जगत का कोई गुरु, जगत का हितैषी कभी-कभी धरती पर आता है, जो आत्मदेव में स्वयं पहुँचा हो।

तो तुम्हारे अहं की मटकी फूटे, कन्हैया का ऐसा प्रेमभरा रस लग जाय ताकि आपका मंगल हो जाय। मटकी फोड़ना मेरा उद्देश्य नहीं है। मटकी के भीतर छुपा हुआ जो मधुमय मधुरस है, नित्य नवीन रस है वह ब्रह्मसुख प्रकटे। श्रीकृष्ण ने जीवनभर वही किया और मेरा भी उद्देश्य वही है।

पुण्यदायी तिथियाँ

२० अगस्त : रक्षाबंधन (रात्रि ८-४८ के बाद)

२८ अगस्त : जन्माष्टमी (उपवास, जप व रात्रि-जागरण का विशेष महत्त्व) (निशीथकाल : रात्रि १२-१७ से १-०३), बुधवारी अष्टमी (सूर्योदय से २९ अगस्त प्रातः ४-१२ तक)

१ सितम्बर : अजा एकादशी (सर्व पापनाशक व्रत), रविपुष्यामृत योग (रात्रि १२-१८ से २ सितम्बर सूर्योदय तक)

१० सितम्बर : ऋषि पंचमी

१५ सितम्बर : पद्मा-परिवर्तिनी एकादशी (पापों से मुक्त करनेवाला व्रत)

१६ सितम्बर : षडशीति संक्रांति (पुण्यकाल : दोपहर १२-३४ से सूर्यास्त)

अमृत-बिंदु

वैकुंठ क्या है ? अकुंठित मति ही वैकुंठ है। सर्प क्या है ? संसार ही सर्प है। क्षीरसागर क्या है ? आपका अंतःकरण क्षीरसागर है लेकिन अनजान लोग समझते हैं कि भगवान सर्प पर लेटे हैं क्षीरसागर में। अंतःकरण की आपाधापी छोड़कर आत्मविश्रांति पाना यह क्षीरसागर में लेटना है।

- पूज्य बापूजी

ढूँढ़ो तो जानें

'श्रीमद् भगवद्गीता' में दिये गये भगवान श्रीकृष्ण के नामों में से १० नामों के अर्थ नीचे दिये जा रहे हैं। उनके आधार पर वर्ग-पहेली में से वे नाम खोजिये।

(१) सर्वव्यापक (२) 'क' - ब्रह्मा को और 'ईश' - शिव को वश में रखनेवाले (३) केशि नामक दैत्य का नाश करनेवाले (४) जगत के पति (५) देवताओं में श्रेष्ठ (६) ऐश्वर्य, धर्म, यश, लक्ष्मी, वैराग्य और मोक्ष - ये छः पदार्थ देनेवाले (७) निग्रह और अनुग्रह करने में जिनके हाथ समर्थ हैं वे (८) यदुकुल में जन्मे हुए (९) संसाररूपी दुःख हरनेवाले (१०) माया के पति

म	मी	ट	मा	न	ज	न	दि	ल	अ	थ	ह
द	रि	कं	च	ति	रं	डी	द	स	र	रि	घ
र	यो	दा	त्प	क	र	सं	क	षू	य	च	अ
गी	द	ग	फ	त्र	क्षा	कु	दी	र	नि	श	त
त्रि	ज	श	वि	व	न	वा	ग	भ	ठ	शि	त्प
र	हा	व	ष्णु	त्त	ध	ली	हो	दी	पः	ग	के
र	शि	बा	ठ	वि	म	वे	पा	दे	रो	श	टी
ती	या	ड	रु	ति	म	व	म	क	व	गु	चं
यं	नं	द	य	भ	ली	हा	मी	र	रु	व	ड
ज	वा	ड़	व	डी	बा	व	न	पू	ध	ल	र
ता	वि	द	सी	हु	ङ	ति	त	मा	स	ह	घ
गी	त	भ	चं	र	ष	ष्णु	पि	द	बु	प	र

गतांक की 'ढूँढ़ो तो जानें' वर्ग-पहेली के उत्तर

(१) साँईं लीलाशाहजी (२) संत आशारामजी बापू (३) कबीरजी (४) शबरी (५) तोटकाचार्य (६) बाला, मरदाना (७) राजा परीक्षित (८) पूरणपोड़ा (९) संत नामदेवजी (१०) संत एकनाथजी

***

जो आदमी अपनी आवश्यकता कम रखकर अपनी बाकी आय का सदुपयोग करता है उसका हृदय जल्दी सत्पद में टिक जाता है ।

उत्तराखंड में पीड़ितों की सेवा में आगे आया संत श्री आशारामजी आश्रम

भुज (गुजरात) का भूकम्प हो या दक्षिण भारत में सुनामी (समुद्री तूफान) से हुई तबाही, ओड़िशा की प्राकृतिक आपदाएँ हों या फिर बिहार व गुजरात में आयी बाढ़ - देश में आयी प्रत्येक आपदा में 'सर्वभूतहिते रतः' पूज्य बापूजी ने हर प्रकार की सहायता व्यापक स्तर पर प्रदान कर सेवायोग का अनुपम आदर्श प्रस्तुत किया है। पूज्यश्री की प्रेरणा व मार्गदर्शन से उनके कर्मयोगी शिष्य भी इन सेवाकार्यों में पूरी दृढ़ता से लग जाते हैं। हाल ही में उत्तराखंड में आयी भीषण प्राकृतिक आपदा की खबर मिली तो पूज्य बापूजी का हृदय करुणा से द्रवीभूत हो गया था। ऋषिकेश, देहरादून, हरिद्वार व नई टिहरी के आश्रमों तथा विभिन्न सेवा समितियों एवं युवा सेवा संघों के साथ हजारों साधक तुरंत राहतकार्यों में जुट गये। तीर्थयात्रियों के साथ बाढ़प्रभावित स्थानीय लोगों तक राहत-सामग्री शीघ्र पहुँचायी जा सके, इसके लिए विभिन्न यात्रा मार्गों तथा दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में साधकों के अलग-अलग दल राहतकार्यों में जुट गये।

मयाली और तिलवाड़ा, जिला रुद्रप्रयाग में नमकीन, बिस्कुट, ग्लूकोज, पानी के पाउच आदि बाँटे गये। बाढ़ से तहस-नहस हुए नारायण बगड़ (चमोली) में २०० परिवारों को, चन्द्रापुरी तथा रतूड़ा (रुद्रप्रयाग) में ३०० तथा हेलंग (चमोली) के ऊपरवाले १० पर्वतीय गाँवों में २०० परिवारों में कम्बल, दरियाँ, तौलिये, रेनकोट, लालटेनें, लाइटर्स, तिरपाल, तवे, तपेलियाँ, चम्मच, थालियाँ, कटोरियाँ, गिलास, कपड़े तथा दूध पाउडर, दाल, चावल, आटा, दलिया, माचिस, तेल आदि राशन-सामग्रियों का वितरण किया गया। गोविंदघाट सेवाकेन्द्र पर करीब एक हफ्ते तक विशाल भंडारा चलता रहा। गोविंदघाट के दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में वाहन-व्यवस्था भी की गयी। इसी प्रकार गोचर (चमोली) में २२ जून से २ जुलाई तक भंडारा चला तथा नमकीन, बिस्कुट, पानी की बोतलें आदि सामग्रियाँ बाँटी गयीं। २४ जून को नई दिल्ली में हुए सत्संग-कार्यक्रम में पूज्य बापूजी के साथ लाखों सत्संगियों ने इस भयानक प्राकृतिक आपदा की चपेट में आकर पहाड़ों में फँसे लोगों की सलामती के लिए भगवत्प्रार्थना की तथा

मृतात्माओं को श्रद्धांजलि दी।

ऋषिकेश में बाढ़ से प्रभावित साधु-संतों एवं लोगों में जूते-चप्पल और खाद्य सामग्री आदि का वितरण किया गया। यहाँ बस स्टैंड पर लगे सेवाकेन्द्र में २१ से २८ जून तक भंडारा चला तथा बिस्कुट आदि खाद्य सामग्री, शरबत, जूते-चप्पल, पानी की बोतलें, दवाइयाँ आदि सामग्री का वितरण किया गया। बस स्टैंड तथा रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों के लिए नाश्ते व भोजन की व्यवस्था के साथ-साथ उन्हें उनके गंतव्य स्थान तक पहुँचाने हेतु वाहन-सेवा भी चालू की गयी थी। यात्रा से सकुशल लौटे यात्रियों को दैनिक उपयोगी वस्तुओं के साथ हेल्पलाइन सुविधा भी प्रदान की गयी। लोगों को आर्थिक सहायता भी दी गयी।

गढ़वाल बस स्टैंड, ऋषिकेश में 'विश्व हिन्दू परिषद' का 'सेवा-सहायता केन्द्र' आश्रम के 'सेवा-सहायता

केन्द्र' के बगल में ही था। जब श्री अशोक सिंहलजी को आश्रम द्वारा हो रहे सेवाकार्यों की जानकारी मिली तो उन्होंने कहा : **''पूज्य बापूजी के सेवाकार्य केवल एक जगह नहीं, सभी जगहों पर और बड़ी तत्परता से चलते हैं। बापूजी के चरणों में मेरे प्रणाम हैं।''**

हरिद्वार आश्रम में भी आपदा-पीड़ितों के लिए निःशुल्क आवास व भोजन की व्यवस्था की गयी। व्यापक स्तर पर चलाये जा रहे इन सेवाकार्यों को कई स्थानीय व राष्ट्रीय अखबारों ने प्रसारित भी किया। (देखें 'ऋषि प्रसाद' जुलाई २०१३, पृष्ठ २७)

लगातार ५० वर्षों से पूज्य बापूजी समाज की सेवा में रत हैं लेकिन इन दैवी कार्यों के लिए आश्रम द्वारा किसी प्रकार का कोई चंदा इकट्ठा नहीं किया जाता है। पूज्य बापूजी कहते हैं : ''कोई रुपया-पैसा किसीको भेजने की जरूरत नहीं है। देनेवाला भी ईश्वर है और लेनेवाला भी ईश्वर है। चाहे हजार आदमी की सेवा हो चाहे दस लाख की, ईश्वर की कृपा है सब चलता रहता है।''

आयु अनुसार विशेष आहार

शरीर को स्वस्थ व मजबूत बनाने के लिए प्रोटीन्स, विटामिन्स व खनिज (minerals) युक्त पोषक पदार्थों की आवश्यकता जीवनभर होती है। विभिन्न आयुवर्गों हेतु विभिन्न पोषक तत्त्व जरूरी होते हैं, किस उम्र में कौन-सा तत्त्व सर्वाधिक आवश्यक है यह दिया जा रहा है :

(१) जन्म से लेकर ५ वर्ष की आयु तक : इस उम्र में बच्चों के स्वस्थ शरीर तथा मजबूत हड्डियों के लिए विटामिन 'डी' जो कैल्शियम ग्रहण करने में मदद करता है व लौह तत्त्व अत्यावश्यक होता है। विटामिन 'डी' की पूर्ति में दूध, घी, मक्खन, गेहूँ, मक्का जैसे पोषक पदार्थ तथा प्रातःकालीन सूर्य की किरणें दोनों अत्यंत मददरूप होते हैं। किसी एक की भी कमी होने से बच्चों की हड्डियाँ कमजोर व पतली रह जाती हैं, वे सूखा रोग से ग्रस्त हो जाते हैं। लौह तत्त्व की कमी से बुद्धि का स्तर भी कम रहता है, अतः स्तनपान छुड़ाने के बाद बच्चों के आहार में लौह व विटामिन 'डी' युक्त पदार्थ जरूर शामिल करने चाहिए।

(२) ६ से १९ वर्ष की आयु तक : ६ से १२ वर्ष की आयु बाल्यावस्था और १३ से १९ वर्ष की आयु किशोरावस्था है। इस आयु में शरीर तथा हड्डियों का तेजी से विकास होता है इसलिए कैल्शियम की परम आवश्यकता होती है। बड़ी उम्र में हड्डियों की मजबूती इस आयु में लिये गये कैल्शियम की मात्रा पर निर्भर रहती है। दूध, छाछ, दही, मक्खन, तिल, मूँगफली, अरहर, मूँग, पत्तागोभी, गाजर, गन्ना, संतरा, शलजम, सूखे मेवों व अश्वगंधा में कैल्शियम खूब होता है। आहार-विशेषज्ञों के अनुसार इस आयुवर्ग को कैल्शियम की आपूर्ति के लिए प्रतिदिन एक गिलास दूध अवश्य पीना चाहिए।

इस उम्र में लौह की कमी से बौद्धिक व शारीरिक विकास में रुकावट आती है। राजगिरा, पालक, मेथी, पुदीना, चौलाई आदि हरी सब्जियों एवं खजूर, किशमिश, मुनक्का, अंजीर, काजू, खुरमानी आदि सूखे मेवों तथा करेले, गाजर, टमाटर, नारियल, अंगूर, अनार, अरहर, चना, उड़द, सोयाबीन आदि पदार्थों के उपयोग से लौह तत्त्व की आपूर्ति सहजता से की जा सकती है।

किशोरावस्था में प्रजनन क्षमता के विकास हेतु जस्ता (zinc) एक महत्त्वपूर्ण खनिज है। सभी अनाजों में यह पाया जाता है। इस आयु में खनिज की कमी से बालकों का स्वभाव हिंसक व क्रोधी हो जाता है तथा बालिकाओं में भूख की कमी एवं मानसिक

तनाव पैदा होता है। अनाज, दालों, सब्जियों व कंदमूलों (गाजर, शकरकंद, मूली, चुकंदर आदि) में खनिज विपुल मात्रा में होते हैं।

(३) २० से ३० वर्ष की आयु तक : इस युवावस्था में सर्वाधिक आवश्यकता होती है लौह तत्त्व, एंटी-ऑक्सीडेंट्स, फॉलिक एसिड तथा विटामिन 'ई' व 'सी' की।

(क) लौह तत्त्व : मासिक धर्म के कारण पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को लौह तत्त्व की दोगुनी जरूरत होती है।

(ख) एंटी-ऑक्सीडेंट्स : कोशिकाओं को क्षतिग्रस्त होने से बचाने हेतु तथा स्त्री-पुरुषों के प्रजनन-संस्थान को स्वस्थ बनाये रखने के लिए एंटी-ऑक्सीडेंट्स आवश्यक होते हैं। आँवला, मुनक्का, अंगूर, अनार, सेवफल, जामुन, बेर, नारंगी, आलूबुखारा, स्ट्रॉबेरी, रसभरी, पालक, टमाटर में एंटी-ऑक्सीडेंट्स अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। फलों के छिलके व बिना पकाये पदार्थ जैसे सलाद, चटनी आदि में भी ये विपुल मात्रा में होते हैं। अन्न को अधिक पकाने से वे घट जाते हैं।

(ग) फॉलिक एसिड : महिलाओं में युवावस्था व प्रारम्भिक गर्भावस्था में फॉलिक एसिड की भी आवश्यकता होती है। यह फूलगोभी, केला, संतरा, सेम, पत्तेदार हरी सब्जियों, खट्टे-रसदार फलों, आड़ू, मटर, पालक, फलियों व शतावरी आदि में पाया जाता है।

(घ) विटामिन 'ई' : पुरुषों में पुंसत्वशक्ति व स्त्रियों में गर्भधारण क्षमता बनाये रखने के लिए इसकी आवश्यकता होती है। यह हृदय व रक्तवाहिनियों को स्वस्थ रखकर रक्तदाब नियंत्रित रखता है। इससे गम्भीर हृदयरोगों से रक्षा होती है। अंकुरित अनाज, वनस्पतिजन्य तेल (तिल, मूँगफली, सोयाबीन, नारियल तेल आदि) व सूखे मेवे विटामिन 'ई' के अच्छे स्रोत हैं। एक चुटकी तुलसी के बीज रात का भिगोकर सुबह सेवन करने से भी विटामिन 'ई' प्राप्त होता है।

(ङ) विटामिन 'सी' : रक्त को शुद्ध व रक्तवाहिनियों को लचीला बनाये रखने तथा हड्डियों की मजबूती के लिए यह आवश्यक है। संतरा, आँवला, नींबू, अनन्नास आदि खट्टे व रसदार फल, टमाटर, मूली, पपीता, केला, अमरूद, चुकंदर आदि में यह अच्छी मात्रा में पाया जाता है।

(४) ३१ से ५० वर्ष की आयु तक : इस प्रौढ़ावस्था के दौरान कैल्शियम, विटामिन 'ई' और फॉलिक एसिड की आवश्यकता अधिक होती है। फॉलिक एसिड व विटामिन 'ई' हृदयरोगों की सम्भावनाओं को कम करते हैं।

महिलाओं में रजोनिवृत्ति के बाद इस्ट्रोजन हार्मोन स्रावित होना बंद हो जाता है, जिसके अभाव में कैल्शियम का अवशोषण मंद पड़ जाता है, अतः रजोनिवृत्ति के बाद हड्डियों को कमजोर होने से बचाने के लिए कैल्शियमयुक्त पदार्थों की जरूरत अधिक होती है।

(५) ५१ से ७० वर्ष या इससे ऊपर की आयु : इस उम्र के दौरान कोशिकाओं में होनेवाले वार्धक्यजन्य परिवर्तनों को रोकने के लिए एंटी-ऑक्सीडेंट्स सहायक तत्त्व हैं। इनके अभाव में लकवा, हृदयरोग तथा ज्ञानतंतु व ज्ञानेन्द्रियों की दुर्बलता (neurodegenerative changes) एवं कैंसर होने की सम्भावना अधिक होती है। वृद्धावस्था में रक्तचाप को सामान्य रखने में पोटेशियमयुक्त पदार्थ लाभदायी हैं। फलों और सब्जियों, खुरमानी, आलूबुखारा, आड़ू, मुनक्का, खजूर, सूखे नारियल आदि में पोटेशियम समुचित मात्रा में मौजूद होता है। इस आयु में दूध, फल और सब्जियों पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

इस प्रकार आयु अनुसार आहार लेने से व्यक्ति स्वस्थ व रोगमुक्त रहता है।

('ऋषि प्रसाद' प्रतिनिधि)

दिल्ली पूनम-दर्शन के बाद पूज्य बापूजी का २४ जून (शाम) से २९ जून (दोप.) तक दिल्ली के करोलबाग आश्रम व रजोकरी आश्रम में एकांतवास रहा। इस दौरान पूज्यश्री ने जिज्ञासुओं में ज्ञान-भक्ति का प्रसाद लुटाने के साथ उत्तराखंड में आयी प्राकृतिक आपदा में आश्रम द्वारा चलाये जा रहे राहतकार्यों की समीक्षा की।

२९ जून (शाम) व ३० जून को **रोहतक (हरि.)** वासियों को ३ वर्षों के बाद पूज्य बापूजी के सत्संग का सौभाग्य मिला। केवल एक दिन पूर्व जाहिर इस कार्यक्रम में उमड़े विशाल जनसैलाब को चिंता, पाप, भय, अज्ञान को मिटाने की सबसे सरल और परम कुंजी बताते हुए पूज्य बापूजी ने कहा : ''सत्संग से चिंतित की चिंता, पापी के पाप, अहंकारी का अहंकार, भयभीत का भय और अज्ञानी का अज्ञान मिटता है। भक्त को भक्ति, प्रेमी को भगवत्प्रेम, योगी को भगवद्योग मिलता है। सत्संग द्वारा जो सुनने-जानने को मिल गया, उसके प्रभाव से उसकी दुर्गति नहीं हो सकती।''

यहाँ के सत्संगियों को पूज्यश्री ने पलाश व तरबूज का शरबत भी पिलवाया। **३० जून** की रात्रि को **बहादुरगढ़ (हरि.)** में सत्संग का तीसरा सत्र आयोजित हुआ। यहाँ पूज्यश्री ने भक्तों को रात्रि १०.३० बजे तक सत्संग-अमृत का पान कराया। १ जुलाई को एकांतवास रहा और फिर शुरू हुआ गुरुपूर्णिमा महोत्सव।

गुरुपूर्णिमा महोत्सव २०१३

इस बार देश के ७ राज्यों के १० स्थानों पर गुरुपूर्णिमा का दर्शन-सत्संग देकर पूज्यश्री ने अपने करोड़ों शिष्यों-भक्तों को आगामी वर्ष के लिए उन्नति के नये पाठ दिये। पूज्य बापूजी का सत्संग माने मानव के सर्वांगीण विकास का समर्थ साधन ! समस्त जीवों का मंगल चाहने व करने वाले पूज्य बापूजी सबकी आध्यात्मिक उन्नति के साथ बौद्धिक, चारित्रिक, शारीरिक सशक्तता का भी पूरा खयाल रखते हैं। गुरुपूनम महापर्व पर भक्तों को नयी सौगात के रूप में पूज्यश्री ने आत्मिक ज्ञान व यौगिक प्रयोगों के अलावा आयु-अनुसार खानपान (पढ़ें पृष्ठ ३०) की सुंदर सीख भी दी।

सभी तेजस्वी व बुद्धिमान बनें इस हेतु पूज्यश्री ने विद्या एवं बौद्धिक लाभ करानेवाला मंत्र-प्रयोग बताया व कराया भी।

गुरुपूनम निमित्त गुरुज्ञान को सँजोनेवाला पहला सौभाग्यशाली स्थल रहा **हैदराबाद (आं.प्र.)**। यहाँ पूर्वनिर्धारित सत्संग **४ व ५ जुलाई** को था परंतु २ जुलाई (शाम) को ही पधारकर पूज्य बापूजी ने आंध्र प्रदेशवासियों को निहाल कर दिया। गुरुपूर्णिमा का

गुरु-उद्देश्य समझाते हुए पूज्यश्री बोले :
''गुरुपूर्णिमा हमें मनाती है कि भाई संसार का बोझा उठाने के लिए तुम्हारा जन्म नहीं हुआ है। गुरु की दीक्षा पाकर गुरु के ज्ञान में स्थिति करके वेदांत को व्यवहार में लाओ। दुःख, शोक, चिंता आती है और चली जाती है, तुम अपने-आपमें टिके रहो।''

६ व ७ जुलाई को छत्तीसगढ़ की राजधानी **रायपुर** में पूज्य बापूजी के दर्शन-सत्संग हेतु उमड़ी विशाल जनमेदनी महाकुम्भ के दर्शन करा रही थी। इस सुअवसर पर उपस्थित हुए मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह (वक्तव्य आवरण पृष्ठ ४ पर) एवं शिक्षा, संस्कृति, पर्यटन व लोक-निर्माण विभाग मंत्री श्री बृजमोहन अग्रवाल, आवास, पर्यावरण, परिवहन, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री राजेश मूणत तथा अन्य वरिष्ठ मंत्रीगण पूज्यश्री का सत्संग-सान्निध्य पाकर धन्यता का अनुभव कर रहे थे। ७ जुलाई की शाम को हुई तेज बारिश भी सत्संगप्रेमियों के उत्साह को कम न कर सकी।

यहाँ पूज्य बापूजी ने कहा : ''गुरुपूनम को देवता अपने गुरु बृहस्पति का पूजन करके पुण्य बढ़ाते हैं। मनुष्य अपने गुरु के दर्शन-पूजन से अपने गुरु-तत्त्व को निखारते हैं, पुण्यों को बढ़ाते हैं। गुरुपूनम मानवता की माँग की पूर्ति करनेवाली पूनम है, मानव को महेश्वर के सुख में जगानेवाली पूनम है।''

इसके बाद **८ व ९ जुलाई** को **भोपाल आश्रम (म.प्र.)** में हुए दो दिवसीय महोत्सव में पूज्यश्री विनोद करते हुए बोले : ''हजार-दो हजार शिष्य हों तो ठीक, जब करोड़ों होते हैं तो गुरुद्वार पर सब कैसे आ सकेंगे ? तो कहते हैं : 'गुरुजी ! फिर चलो।' चल भैया ! आ गये हम।'' यहाँ मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने पूज्य बापूजी के दर्शन व आशीर्वचन पाकर अपने को सौभाग्यशाली बताया (वक्तव्य आवरण पृष्ठ ४ पर)।

भोपालवासियों को तृप्त कर पूज्यश्री पधारे **उज्जैन आश्रम**। यहाँ १० व ११ जुलाई को एकांतवास के बाद **१२ जुलाई** को सुबह ११ बजे से आयोजित जाहिर सत्संग में बापूजी बोले : ''ब्रह्मवेत्ता गुरु का एक मिनट का आदर-पूजन सारे तीर्थ करने का फल दे देता है।'' **१२ जुलाई** की ही शाम को **इंदौर आश्रम** में गुरुजी का दर्शन-सत्संग पाकर भक्तों के आनंद का पारावार न रहा। इस प्रकार मध्य प्रदेश में तीन-तीन जगहों पर गुरुपूनम दर्शन देकर करुणासिंधु गुरुदेव ने भक्तों को कृतार्थ कर दिया।

१३ से १४ जुलाई (दोप.) तक **आलंदी आश्रम, पुणे (महा.)** में आषाढ़ी पूनम पर हुई सत्संग-वर्षा ने लाखों भक्तों की अंतर्बाह्य तपन हरकर गुरुज्ञान की शीतलता प्रदान की। ब्रह्मज्ञान व स्वास्थ्य-ज्ञान के साथ आपश्री ने प्रगति का महान सोपान देते हुए कहा : ''और समय गुरु के द्वार न भी पहुँचें लेकिन गुरुपूनम को तो गुरु के द्वार जरूर पहुँचें और नहीं पहुँच सकते तो मानसिक रूप से गुरु से सम्पर्क करें तो आगे की प्रगति होती है।''

गुरुपूनम महोत्सव में दर्शन-सत्संग का सातवाँ पड़ाव रहा **रायता आश्रम (महा.)**। यहाँ **१४ जुलाई (शाम) व १५ जुलाई** के सत्संग में पूज्यवर ने शरीर को स्वस्थ रखते हुए सहज में ईश्वरप्राप्ति की युक्तियाँ बतायीं।

१५ (रात) से १७ जुलाई (शाम) तक पुष्कर के डुंगरिया आश्रम व पंचकुंड आश्रम में पूज्यश्री का एकांतवास रहा। आसपास के सूखाग्रस्त क्षेत्रों की जनता की पीड़ा देखकर करुणा-वरुणालय, मंत्रविज्ञान के ज्ञाता पूज्य बापूजी ने बरसात लानेवाला मंत्र दे के हवन करने को कहा। १७ जुलाई की शाम ५.३० बजे हवन-समाप्ति के बाद पूज्य बापूजी जयपुर हेतु रवाना हुए ही थे कि करीब ६.३०

शुरू हो गयी है।' इस चमत्कार ने मंत्रशक्ति की महिमा को एक बार फिर उजागर कर दिया।

गुरुपूनम महोत्सव का आठवाँ पड़ाव रहा **जयपुर (राज.)**। वहाँ **१८ जुलाई** को जाहिर कार्यक्रम व १९ जुलाई को एकांतवास के बाद पूज्य बापूजी पहुँचे **द्वारका, दिल्ली**। वहाँ **२० व २१ जुलाई (दोप.)** को गुरुपूनम-दर्शन हेतु विशाल जनसैलाब उमड़ा।

९-९ जगहों पर गुरुपूनम के निमित्त दर्शन-सत्संग देने के बाद भी **२१ (शाम) से २३ जुलाई** तक **अहमदाबाद आश्रम** परिसर में भक्तों की भारी भीड़ सभीको बापूजी के तीव्रता से बढ़ते शिष्य-समुदाय का मनोरम प्रदर्शन करा रही थी। अपने सद्गुरु पूज्य बापूजी की एक झलक पाने के लिए पूज्यश्री के निवासस्थान (आश्रम से ४ कि.मी. दूर) से सत्संग-पंडाल तक भक्तों की कतारें लगी थीं। सर्वहितैषी व्यासस्वरूप पूज्य बापूजी ने यहाँ दुःखों से पार होने का गुरु-संदेश दिया, साथ ही मन-बुद्धि को पवित्र व हड्डियों तक के रोगों का शमन करनेवाले पंचगव्य का पान भी करवाया। मंगलमूर्ति पूज्यश्री ने एक के बाद एक आध्यात्मिक ऊँचाइयों के साथ लौकिक उन्नति करानेवाले नये-नये उपहार देकर भक्तों को निहाल कर दिया। पूज्य बापूजी बोले : ''प्रचेताओं को शिवजी ने दर्शन दिया, विष्णुजी ने दर्शन दिया और बाद में परम कल्याण के लिए नारदजी का सत्संग मिलने का आशीर्वाद मिला। वहाँ तक तो तुम पहुँच गये हो। अब नारदजी नहीं तो बापूजी हैं लेकिन है तो सत्संग वही-का-वही ! अब छोटी-मोटी चीजों में उलझने की गलती मत करो, विश्वेश्वर का ज्ञान पा लो !''

इस शुभ अवसर पर पूज्यश्री के पावन करकमलों से शीघ्र आध्यात्मिक उन्नति करानेवाली हरिद्वार एकांत सत्संगों की डीवीडी व एमपीथ्री, विद्यार्थियों हेतु स्कूल बैग व कम्पास बॉक्स तथा विभिन्न भाषाओं के सत्साहित्य का विमोचन हुआ। सत्साहित्य था - हिन्दी में 'हम भारत के लाल हैं', 'तेजस्वी बनो', 'हे वीर ! आगे बढ़ो', कन्नड़ में 'प्रेरक प्रसंग भाग-१', बंगाली में 'संस्कार सिंचन', मराठी में 'हम भारत के लाल हैं' एवं 'हे वीर ! आगे बढ़ो' तथा गुजराती में 'हम भारत के लाल हैं'। हिन्दी, गुजराती व मराठी में प्रकाशित मासिक समाचार पत्र 'लोक कल्याण सेतु' का ओड़िया में भी शुभारम्भ हुआ।

यहाँ २२ जुलाई की रात को इतनी तेज बारिश हुई कि वर्षा-रक्षित निवास पंडालों में भी पानी आ गया। जैसे माँ-बाप अपने बच्चों का खयाल रखते हैं, उससे भी कहीं अधिक पूज्य बापूजी अपने भक्तों का खयाल रखते हैं। तभी तो पूज्यश्री रातभर भक्तों की व्यवस्था की खबर रख रहे थे और अगले दिन २३ जुलाई को बिना किसी विश्राम के सत्संग के ३-३ सत्र भी दिये।

अहमदाबाद में जाहिर सत्संग तो २३ जुलाई तक था परंतु २४ की सुबह दीक्षा व सत्संग देकर पूज्यश्री ने भक्तों को कृतकृत्य कर दिया। २४ की शाम को पूज्य बापूजी जयपुर के लिए प्रस्थान कर गये। २५ से २८ जुलाई तक पूज्यश्री का निवाई (राज.) में एकांतवास रहा।

*** पूनम दर्शन ***

१८-२० अगस्त (सुबह ११ बजे तक)- दिल्ली, रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, मो. ९८६८९०६९५९

२० (दोपहर) से २१ अगस्त- अहमदाबाद आश्रम, (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८

*** जन्माष्टमी महोत्सव ***

२८ व २९ अगस्त -संत श्री आशारामजी आश्रम, सूरत, फोन-(०२६१) २७७२२०१/०२

करोड़ों शिष्यों के जनसैलाब को ध्यान में रखते हुए व्यासस्वरूप पूज्य बापूजी के सान्निध्य में

७ राज्यों के १० स्थानों पर मनाया गया गुरुपूर्णिमा महोत्सव

हम सबके भगवान 'बापूजी' को प्रणाम !

RNP. No. GAMC 1132/2012-14
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2014)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/12-14
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2014)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2012-14
WPP LIC No. U (C)-232/2012-14
MH/MR-NW-57/2012-14
'D' No. MR/TECH/47.4/2013

गुरुपूर्णिमा महोत्सव, भोपाल

जगत के हित और प्यारों के कल्याण के लिए जिन्होंने यह देह धारण की है, हम सबके भगवान बापूजी के चरणों में मैं प्रणाम करता हूँ। मैं रोज बापूजी से मिल नहीं पाता लेकिन जब पूजा में बैठता हूँ तो अपने-आप बापूजी आँखों के सामने आ जाते हैं और कहते हैं : 'करता रह, करता रह, करता रह... रास्ता मत भटकना।' क्योंकि राजनीति की राहें बड़ी रपटीली होती हैं। कदम-कदम पर फिसलने का खतरा होता है।

ज्ञान, भक्ति और कर्म इनका त्रिवेणी संगम हैं हमारे आशारामजी बापू भगवान ! अगर ऐसा त्रिवेणी संगम मिल जाय तो कुम्भ का स्नान भी वहीं कर लो, भक्ति के सागर में डूब जाओ और अपने-आपको धन्य कर लो। मैं भी अपने-आपको धन्य करने आया हूँ बापू ! ऐसे आशीर्वाद की वर्षा करना कि मेहनत और ईमानदारी से अपनी जनता की सेवा करते हुए हम लोगों के जीवन-स्तर को ऊपर उठायें। - श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश

ईश्वर ही बापूजी जैसे संतों के रूप में अवतार लेता है

पूरे छत्तीसगढ़वासियों की ओर से मैं बापूजी को प्रणाम करता हूँ। पूज्य बापूजी ने हेलिकॉप्टर दुर्घटना में चमत्कार के माध्यम से हमें दिव्य शक्ति का दर्शन कराया है कि संतों के अंदर कितनी ताकत होती है !

बापूजी हम लोगों को प्रेम और सरलता के साथ बच्चों जैसा स्नेह देते हैं। बापूजी के सत्संग से लोग आध्यात्मिक ज्ञान के साथ दिनचर्या, ऋतु अनुसार आहार-विहार का ज्ञान भी ले के जाते हैं। हम उन्हें पाते हैं एक आध्यात्मिक गुरु की भूमिका में, एक स्वास्थ्य-रक्षक की भूमिका में, एक योगाचार्य की भूमिका में... पता नहीं बापू के कितने रूप हैं ! जितनी बार सुनते हैं नयी चीज, नया विचार सुनते हैं, उनका भाव ही अलग है। इनके रूपों को देखकर निश्चित रूप से हम कहेंगे कि ईश्वर ही ऐसे संतों के रूप में अवतार लेकर दिव्य शक्ति देता है।

जब हेलिकॉप्टर दुर्घटना हुई तो मैं घबरा गया था। घर में सन्नाटा छा गया, सबने कहा फोन लगाओ। मैंने कहा : ''पूरा हेलिकॉप्टर चूर-चूर हो गया, डॉक्टर परेशान होंगे, पूरे लोग परेशान होंगे, बापूजी फोन कैसे उठायेंगे ?'' मगर आप आश्चर्य करोगे, यह प्रेम है बापू का कि मैं आधे घंटे तक फोन लगाता रहा। बापूजी खुद फोन उठाकर बोले : ''क्यों घबरा रहा है तू, क्यों डरता है ?'' मेरी आवाज दबी थी, इनकी आवाज में दबंगई थी। ऐसा रूप मैंने पहले कभी नहीं देखा था। छोटा-सा कार एक्सीडेंट हो जाय तो लोगों के हाथ-पैर टूटे-न टूटे मगर वे इतना ज्यादा घबरा जाते हैं कि दो दिन तक बात ही नहीं करते, मगर बापूजी की आवाज सुनकर मैंने पत्नी और बच्चों को कहा : ''बापूजी तो तड़ातड़ बोल रहे हैं भैया !'' यह जबरदस्त चमत्कार है। हम सबकी ओर से आपसे प्रार्थना है कि हम आपके बताये मार्ग पर चलते रहें। - डॉ. रमन सिंह, मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

गुरुपूर्णिमा महोत्सव, रायपुर
यौगिक प्रयोग करता हुआ जनसैलाब

Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month. * Posting at ND PSO on 5th & 6th of E.M. * Posting at MBI Patrika Channel on 9th & 10th of E.M.